हज़रत अली अलैहिस-सलाम की बरतरी की (20) बीस दलीलें

लेखक

हुज्जतुल-इस्लाम वलमुसलेमीन शेख

डॉक्टर **अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ** (कतीफ)

अनुवाद

हुज्जतुल-इस्लामं वलमुसलेमीन

मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन (कुवैत)

प्रकाशक

इदारा-ए-इस्लाह लखनऊ-226003, यूपी, इंडिया

सहयोग :**इमाम अल-मैहदी** अज. ट्रस्ट

हज़रत अली अलैहिस–सलाम

की

बरतरी की बीस दलीलें

लेखक

हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन शेख

डॉक्टर **अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ** (क़तीफ)

अनुवाद

हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन (कुवैत)

प्रकाशक

इदारा–ए–इस्लाह लखनऊ–226003, यूपी, इंडिया

सहयोग :**इमाम अल–महदी** अज. **ट्रस्ट**

अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है

नाम पुस्तक	:	हज़रत अली[अ0स0] की बरतरी की बीस दलीलें
लेखक	:	हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन शेख डॉक्टर अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ़ (क़तीफ)
अनुवादक	:	हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन (कुवैत)
वर्ष	:	अगस्त 2023
पेज	:	76
मुद्रण	:	इम्प्रेशन ऑफसेट प्रेस, लखनऊ
मूल्य	:	25 रुपये
प्रकाशक	:	इदारा ए इस्लाह, लखनऊ–226003
सहयोग	:	इमाम अल–मैहदी अज. ट्रस्ट

ISBN:

इंतिसाब

इस पुस्तिका और अनुवाद को सबसे पहले बारगाहे हज़रत सरकार इमामे ज़माना हुज्जत इब्ने अलहसन(अज) की ख़िदमत में हदिया करता हूँ।

और फिर

उनके सदक़े में तमाम शोहदा-ओ-सालेहीन

और विलायते अमीरुल मोमेनीन अलैहिस-सलाम की राह में इस दुनिया से जाने वाले तमाम शहिदों को समर्पित करता हूँ।

विषय–सूची

क्र	विषय	पेज
1	प्रकाशक नोट	5
2	अनुवादक के क़लम से	7
3	लेखक के दो शब्द	10
	हज़रत अली अलैहिस–सलाम के बीस खुसुसीआत	
4	1.सबसे पहले मुस्लमान	15
5	2. रसूल[स0] के साथ सबसे पहले नमाज़ पढ़ने वाले	21
6	3. नबी ए अकरम[स0] के पहले शागिर्द	24
7	4. सबसे पहले कातिबे वही	26
8	5. कुरआन–ए–मजीद के सबसे पहले मुदव्वन	27
9	6. नबी अकरम[स0] की सबसे पहले बैअत	33
10	7. सबसे पहले वसी का ख़िताब	35
11	8. इस्लाम में सबसे पहले इमाम	37
12	9. सबसे पहले अमीर–ऊल–मोमनीन	38
13	10. सबसे पहले फ़िदाकार	40
14	11. राह–ए–खुदा में सबसे पहले मुजाहिद	44
15	12. इस्लाम के सबसे पहले क़ाज़ी	46
16	13. इस्लाम के पहले पर्चमदार	48
17	14. सब से पहले हाश्मी ख़लीफ़ा	52
18	15. इस्लाम के सबसे पहले मुसन्निफ़	53
19	16. नहव के बानी	54
20	17. इल्मे कलाम के बानी–ओ–मोअस्सि	59
21	18. आईने हुकूमत के सबसे पहले बानी	61
22	19. सबसे पहले बुतशिकन	63
23	20. सबसे पहले ख़ानए खुदा में विलादत और.....	69
24	हुस्ने इख़्तेताम	71
25	मनाबए–ओ–माख़ज़	73

प्रकाशक नोट

बिस्मेही तआला

अलहम्दो ल अहलही वस–सलातो अला अहलहा

एक लाख तेईस हज़ार नौ सौ निन्नानवे अम्बिया(स0अ0) में से अगर हज़रत ख़ातिमुल अम्बिया को अलग कर लिया जाये तो दीगर तमाम अम्बिया(स0अ0) के ख़िदमात व तालीमात ना–मुकम्मल नज़र आएँगे। इसी तरह हज़रत ख़ातिमुल अम्बिया(स0अ0) के तब्लीग़ी ख़िदमात में से अगर बिला फ़सल जानशीन–ए–रसूल अमीर–ऊल–मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस–सलाम की जाँ–फ़िशानियों का तज़किरा अलग कर दिया जाये तो पैग़ंबरे इस्लाम(स0अ0) के तबलीग़ात की तस्वीर धुँधली नज़र आने लगती है। इसी तरह अगर बिंन्ते नबी हज़रत फ़ातिमा–ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा के अमली तालीमात को नज़रअंदाज़ कर दिया जाये तो मर्द–व–ख़वातीन के लिए पैग़मबर के जो तालीमात हैं उनका ख़ाका मुकम्मल होता हुआ नज़र नही आता।

अमीर–ऊल–मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस–सलाम बिला फ़सल पैग़मबर के तब्लीग़ी मिशन में शब–ओ–रोज़ शरीक–व–हमसर नज़र आते हैं। लिहाज़ा ये अक़्ली–व–मंतक़ी बात है कि उनके बाद के जितने भी अफ़राद हैं उनका वो दर्जा हो हि नहीं सकता जो अमीरूलमोमेनीन(अ0) का है। इस किताब के लेखक हुज्जातुल इस्लाम–वल मुस्लिमीन शेख़ डा0 अब्दुल्लाह अल युसूफ़ ने बीस बेहतरीन दलीलों अक़्लीया–व–नक़लिया के ज़रीए आलम–ए–मुम्किनात में बाद–ए–पैग़म्बर हज़रत अली अलैहिस–सलाम की बरतरी इस तरह साबित की

है कि जिसको रद्द किया ही नहीं जा सकता। एक प्रतिभाशाली आलिमे दीन हुज्जातुल–इस्लाम मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन साहिब ने आसान उर्दू व हिन्दी तर्जुमे के ज़रीए इस मुफ़ीद किताब को मुफ़ीदतर बना दिया है।

इदारा–ए–इस्लाह लखनऊ ने इस पुस्तिका को उर्दू, हिन्दी व बंगाली भाषा में प्रकाशन का शरफ़ हासिल किया है। और उम्मीद है कि इसी तरह तौफ़ीकाते माबूद और हज़रत ख़ातिमुलअम्बिया[अ0] और उनकी इतरते ताहिरा की बरकतों के ज़ेरे साया आईन्दा भी इंशा अल्लाह ताला इदारे का ये इशाअती सफ़र जारी–ओ–सारी रहेगा।

फ़क़त वस्सलाम
सैय्यद मोहम्मद जाबिर जौरासी
निगरान माहनामा इस्लाह
15 शाबानुल मोअज़्ज़म 1444 हिजरी

अनुवादक के क़लम से

रसूले अकरम(स0अ0) के असहाब और साथियों में हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस–सलाम की शख़्सियत सबसे मुनफ़रिद और नुमायां थी। आप आग़ोश व मकतबे रिसालत(स0) के परवर्दा थे और सीरते रसूले अकरम(स0अ0) की अमली और ज़ाहिरी तस्वीर को आपके वुजूद में देखा जा सकता था। बचपन से आप रसूले अकरम के हमराह रहे और आंहज़रत(स0अ0) ने अपने ही दामन में आपकी परवरिश की है।

वो तमाम अख़्लाक़–व–फ़ज़ाएल और अहकाम–व–अक़ाएद जो रसूले अकरम तमाम मुसलमानों को सिखाने पर मामूर थे और पूरी उम्र आप उनकी तालीमो तबलीग़ करते रहे, हज़रत अली अलैहिस–सलाम हर ो हिकमत, हर हुक्मो अख़लाक़ी फ़ज़ीलत में तमाम मुसलमानों में पेश क़दम और उन सबसे आगे रहते थे। और इस हक़ीक़त को शिया और सुन्नी तमाम ऊलेमा ने माना एकमत होकर अपनी किताबों में लिखा है।

तारीख़ व हदीस के रिफ़्रेन्स व सोर्स का अगर कोई मुंसिफ़ाना मुतालेआ और उनमें तहक़ीक़ करे तो बिलाशुब्हा–व–बिला तरदीद वो इसी नतीजा पर पहुँचेगा और हर मैदान में हज़रत अली अलैहिस–सलाम को अव्वल–व–तमाम मुसलमानों पर मुक़द्दम और उनसे अफ़ज़ल पाएगा।

यह पुस्तिका इसी दिशा में एक प्रयास है। ये पुस्तिका जिसका उनवान है "हज़रत अली(अ0) की बरतरी की बीस दलीलें"। इसका अरबी नाम अशरून मनकबतह फ़ी असबक़ीयतह अल–इमाम अली(अ0) इस पुस्तिका के लेखक "हुज्जातुल–इस्लाम वलमुस्लिमीन अल–शेख़ डाक्टर अबदुल्ला अल–यूसुफ़" हैं।

जो एक बा तक़वा और अख़लाक़ी फ़ज़ाएलो कमालात से आरास्ता, इतिहास–हदिसों–तफ़ासीर में गहरी निगाह रखने वाले सक्रिय बुद्धिजीवी व आलिमे दीन हैं। इनकी पचास से ज़्यादा किताबें हैं। बहुत सी किताबें मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जुमा होकर प्रकाशित हो चुकी हैं।

मौजू की एहमियतो–जज़ाबियत के पेशे नज़र बंदा ए हक़ीर ने इस पुस्तिका को लेखक़ की दरख़्वास्त पर अरबी से उर्दू व हिन्दी में अनुवाद किया है और इससे पहले भी मैंने मौसूफ़ की एक किताब "इमाम सज्जाद और इन्सानी तरबियत के उनवान से उर्दू व हिन्दी में तर्जुमा किया था, जो इसी इदारा–ए–इस्लाह लखनऊ से प्राकाशित हुई थी।

यह पुस्तक ज़्यादा नहीं है लेकिन इसके मज़ामीन बेहद दिलचस्प–व–तहक़ीक़ शुदा और अहम मुनाबा–ओ–माखुज़ से हासिल किए गए हैं, जिसकी वजह से इस किताब की एहमियत मज़ीद बढ़ जाती है। मोअल्लिफ़ ने इस पुस्तिका में मौलाए कायनात की ऐसी बीस फ़ज़ीलतें तहरीर फ़रमाई हैं जिनसे तमाम मुसलमानों पर उनकी अज़मत और बरतरी साबित होती है। और इस सिलसिले में शिया और अहले सुन्नत की मोअतबर किताबों से अपनी बात को मुस्तनद किया है।

इस पुस्तिका के तरजुमे में, मेरी कोशिश रही है कि सिर्फ अलफ़ाज़ो–इबारात ही को अरबी से उर्दू ज़बान में ना बदलूँ, बल्कि तरजुमे में मुहावरों का लिहाज़ किया गया है और जो बात या जुमला अरबी में कहा गया है और उर्दू की मुहावराती ज़बान में इस का नहज मुख़्तलिफ़ है तो तरजुमे में उर्दू मुहावरे का लिहाज़ किया गया है ताकि क़ारईन के लिए मफ़हूम वाज़ेह–ओ–नुमायां रहे। यही वजह है कि बाअज़ जगहों पर बाअज़ अलफ़ाज़ का हज़फ़–ओ–इज़ाफा हुआ है। लेकिन इन तमाम मवाक़ेअ पर मुतरजिम के मफ़हूम और मतलब में कोई तसर्रुफ़ नहीं हुआ है।

अलबत्ता तमाम–तर काविशों और मेहनतों के बावजूद अभी इमकान है कि मेरे नाक़िस क़लम से शायद कोई चीज़ छूट गई हो, लेकिन हत्तल इमकान इतमीनान के लिए इस तर्जुमा पर नज़र–ए–सानी के लिए बंदा ए हक़ीर ने उस्तादे मोहतरम "हुज्जातुल–इस्लाम वलमुस्लिमीन जनाब नूर मोहम्मद सालिसी साहिब क़िबला कुम्मी–व–नजफ़ी को ज़हमत दी थी। उनकी इस्लाह व हिदायत के सबब आज ये पुस्तिका लायक़े नशर बना। मैं तहे दिल उनकी शफ़क़तो–ज़हमतों का शुक्रगुज़ार और बारगाहे खुदा में उनकी दाइमी सेहतो आफ़ियत और तूले उम्र के लिए दुआ–गो हूँ।

ये पुस्तिका छपने से पहले मुताअद्दिद अफ़राद की निगाहों से ये पुस्तिका गुज़र चुकी है लेकिन फिर भी हम "जायज़ उल–ख़ता हैं और इस बात के इमकान की नफ़ी नहीं करते हैं कि इस में कमियां बाक़ी नहीं हैं। और बारगाहे खुदा में तहे दिल से दुआ–गो हैं कि खुदा मोअल्लिफ़ के बाद मुझ हक़ीर से भी इस काविश को कुबूल फ़रमाए और मेरे आमाल–नामे में इसे ज़ख़ीराए दुनिया–ओ–उक़बा क़रार दे और मोअल्लिफे किताब को और मुझ हक़ीर को नेज़ वो तमाम लोग जो इस पुस्तिका के छपने में हिस्सादार बने हैं, हम सबको इस क़ौले रसूल(स0अ0) "अल्लाहुम्मा् व आले मन वालाह।।। वनसुर मन नसरा।। का मिस्दाक़ क़रार दे। मन तही दस्तमो–अग़नी अस्त

मिर्ज़ा अस्करी हुसैन
5–रजब अलमुरज्जब, 1444 27 जनवरी, 2023
सलमीया, कुवैत

लेखाक के दो शब्द

तारीख़ो हदीस की बेशुमार किताबों से ये बात साबित है कि हज़रत अली अलैहिस–सलाम सबसे पहले मुसलमान हैं और इस्लाम में सबक़त, रसूले अकरम स0 की रिसालत आंहज़रत स0 पर ईमान, इनके पीछे नमाज़ की अदायगी और तमाम तल्ख़–ओ–शीरीं हालात में आंहज़रत के साथ होना, हज़रत अली अलैहिस–सलाम के अहम इमतियाज़ात में से है।

मुसलमानों पर इमाम अली अलैहिस–सलाम की बरतरी और फजीलत का ये पहलू कुरआन–ए–करीम की इस आयत से वाज़ेह होता है जिसमें अल्लाह ने इस्लाम में सबक़त लेने वाले अंसार–ओ–मुहाजिरीन को बरतर बताया है। चुनांचे इरशाद है:

وَالسَّابِقُونَ الأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالأَنصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُم بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللهُ عَنْهُمْ وَرَضُواْ عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَداً ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

मुहाजिरीन–ओ–अंसार में से सबक़त करने वाले और जिन लोगों ने नेकी में उनका इत्तिबा किया है इन सबसे खुदा राज़ी हो गया है और ये सब खुदा से राज़ी हैं और खुदा ने उनके लिए वो बाग़ात मुहय्या किए हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं और ये उनमें हमेशा रहने वाले हैं और यही बहुत बड़ी कामयाबी है। (सूराए तौबा, आयत १००)

और चूँकि इमाम अली रसूल–ए–खुदा(स0अ0) पर सबसे पहले ईमान लाए और तमाम तल्ख़–ओ–शीरीं हालात में आप इस्लाम में सब पर सबक़त रखते थे, (लिहाज़ा आयत की रौशनी में आप(अ0) तमाम मुस्लमानों पर बरतरी रखते हैं)।

इमाम अली अलैहिस–सलाम की सीरत का मुतालेआ इस बात को साबित करता है कि आप दीन के हर मैदान में अव्वल थे। आप सबसे पहले ईमान लाए, सबसे पहले रसूले खुदा के पीछे नमाज़ अदा की, आप इस्लाम में सबसे पहले इमाम हैं, सबसे पहले अमीर–उल–मोमिनीन का लक़ब आपको मिला, सबसे पहले कुरआने मजीद की जमा आवरी आपने की और आप ही ने सबसे पहले उलूमे कुरआन को पेश किया। आप रसूले खुदा(स0अ0) के सबसे पहले शागिर्द थे, आप ने सबसे पहले रसूले खुदा(स0अ0) के हाथ पर बैअत की और उनकी नुसरत का ऐलान किया। आप सबसे पहले वही के लिखने वाले हैं, और आप ही की विलायत को सबसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किया गया है। सबसे पहले रसूले खुदा(स0अ0) पर आप ही ने अपनी जान फ़िदा की, राह–ए–खुदा में सबसे पहले जिहाद आपने किया, सबसे पहले इस्लाम का परचम आपने अपने हाथों पर उठाया और रिसालत के सबसे पहले मुबल्लिग़ भी आप ही हैं। आप इस्लाम के सबसे पहले क़ाज़ी हैं और आप पहले वो शख़्स हैं, जिन पर रसूले खुदा ने किसी को भी हाकिम नहीं बनाया। आप बनी हाशिम के पहले ख़लीफ़ा हैं और सबसे पहले हुकूमते इस्लामी का आलमी मंशूर आपने तैयार किया है। मुस्लमानों में सबसे पहले मुल्लिफ़ आप हैं।` नहव को आपने ईजाद किया। इस्लाम में` कलाम की बुनियाद सबसे पहले आपने रखी है। सबसे पहले ख़ाना ए खुदा में आप पैदा हुए और शहादत भी मस्जिद में आपसे पहले किसी को मयस्सर नहीं हुई। वरीयता और प्राथमिकता की ये फ़ेहरिस्त बहुत तूलानी है।

यही वजह है कि तमाम उलेमा–ओ–दानिश्वर और तमाम इतिहासकार और विचारकों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि इमाम अली अलैहिस–सलाम की शख़्सियत सब में मुनफ़रिद और बेमिसाल है।

रसूले खुदा अक्सर हज़रत अली अलैहिस–सलाम के फ़ज़ाएल व मनाक़ब बयान करते थे और उल्मा–ओ–मुहद्दिसीन ने मुस्तक़िल तौर पर ऐसी किताबें लिखीं हैं जिनमें सिर्फ़ हज़रत अली अलैहिस–सलाम के फ़ज़ाएल–ओ–मनाक़िब का तज़किरा है। ये तालीफ़ात–ओ–तसनीफ़ात किसी एक मज़हब या मसलक के मानने वालों ने नहीं लिखी बल्कि मुख़्तलिफ़ फ़र्क़–ओ–मसालिक के दानिशवरों ने मौलाए कायनात के फ़ज़ाएलो–मनाक़िब में किताबें लिखी हैं। जैसे निसाई की ख़साएस अमीर–उल–मोमिनीन है, ख्वाहरज़मी की मनाक़िब, असफ़हानी की मनाक़िब अली इब्ने अबी तालिब (अबी बकर अहमद बिन मूसा इब्ने मरदूइया यलअसफ़हानी) इब्ने शहर–आशोब की मनाक़िब आले अबी तालिब वग़ैरह कि ये वो किताबें हैं जो सिर्फ मौलाए कायनात के फ़ज़ाएलो–मनाक़िब पर या ज़्यादा–तर उनके फ़ज़ाएल–ओ–मनाक़िब पर मुश्तमिल हैं।

और हर दौर में अल्लाह के फ़ज़ल–ओ–करम से ऐसे उल्मा–ओ–दानिश्वर गुज़रे हैं जिन्हों ने हज़रत अली अलैहिस्सलाम के फ़ज़ाएल–ओ–मनाक़िब पर किताबें और रिसाले तालीफ़ किए और लोगों तक पहुंचाए हैं, बावजूद यह के इन उल्मा–ओ–दानिशवरों को मौलाए कायनात के फ़ज़ाएलओ–मनाक़िब नशर करने के जुर्म में बेशुमार अज़ीयतों और मुश्किलात का सामना करना पड़ा है, बल्कि उनमें से बाअज़ तो इस राह में शहीद भी हुए हैं

अलबत्ता दुश्मनाने अली अलैहिस्सलाम तमाम कोशिशों के बावजूद भी उन के फ़ज़ाएल और खूबियों को छुपा न सके, ज़माना गुज़रता गया और दिन–ब–दिन आप के फ़ज़ाएल नुमायां होते गए, जैसा कि इब्ने अबी अलहदीद कहते हैं मैं इस इन्सान की फ़ज़ीलत में क्या कहूं, जिसके दुश्मनों ने भी फ़ज़ाएल का ऐतराफ़

किया, और उनसे इनकारे फ़ज़ाएलो–मनाक़िब नहीं हो सका और ना ही वो छपा सके मै इस शख़्स के बारे में क्या कहूं कि जिसके दर पर फ़ज़ीलतें सजदा–रेज़ हों, जिसकी फ़ज़ीलत के ऐतराफ़ में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के मानने वाले भी मुत्तहिद हैं और हर फ़िरक़े का शख़्स उस की ज़ात में जज़्ब है, वो फ़ज़ीलतों का सरदार और मनक़बतों का सर चश्मा है। (शरह नहजुलबलाग़ा, इब्ने अबी अलहदीद, जि.1 पे.35)

जो फ़ज़ाएल व मनाक़िब हज़रत अली अलैहिस्सलाम के सिलसिले में वारिद हुए हैं, ऐसे फ़ज़ाएलो–मनाक़िब असहाबे रसूले अकरम मे किसी के नहीं हैं। ये वो ताबिंदा हक़ीक़त है जिसका तमाम मुहद्दिसीन और दानिशवरों ने ऐतराफ़ किया है और उन मनाक़िबो–फ़ज़ाएल को मुतअद्दिद और सही अस्नाद के साथ रिवायत किया है

किताबे हाज़िर में हज़रत अली अलैहिस्सलाम के बीस ऐसे फ़ज़ाएलो–ख़सुसीयात को बयान किया गया है, जो उनसे क़बल किसी में नहीं थे और वो फ़ज़ाएल आप ही के वजूद में सबसे पहले नुमायां हुए हैं। जिनसे ये अयाँ होता है कि आप क़ाफ़िलए इस्लाम की मुख़्तलिफ़ मराहिल में रहबरी व क़यादत में दीगर तमाम मुस्लमानों पर बरतरी रखते हैं।

हमने इस पुस्तिका में मौलाए कायनात के फ़ज़ाइलो–मनाक़िब से नौजवानों और जदीद नसल को आश्ना कराने के लिए आसान–ओ–सलीस ज़बान में इन फ़ज़ाएल को ज़िक्र किया है जो फ़रीक़ैन की कुतुब अहादीस में मौजूद हैं और मौलाए कायनात की तमाम मुस्लमानों पर बरतरी को साबित करते हैं।

बारगाहे खुदा मे दुआ है कि वो इस पुस्तिका को मेरे आमाल–नामा की ज़ीनत बनाए

يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ * إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ

और वो दिन कि जिसमें मालो–औलाद कोई भी काम नहीं आएगा, सिवाए ये कि इन्सान क़ल्बे सलीम के साथ बारगाहे खुदा में जाये, मेरे नविश्ता को मेरा ज़ादे आख़िरत बनाए। बे–शक अल्लाह तबारका–व–तआला ही उम्मीदों की इंतेहा और रहमत–ओ–फ़ैज़–ओ–जूदो–अता का मरकज़ है। (सूरा शोअरा88–89)

अल्लाहुलमुस्तेआन
अबदुल्लाह अहमद अलयूसुफ़
मंगल 25–रबीउसलिसानी1435 हिजरी
25फरवरी,2014 ई0

बिसमेही तआला

हज़रत अली अलैहिस–सलाम के बीस ख़ुसुसीआत

१.सबसे पहले मुस्लमान

तमाम नामवरो–मारूफ़ मुवरर्ख़ीन इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम सबसे पहले मुस्लमान हैं और आपसे पहले कोई भी मुस्लमान नहीं हुआ था। इस मतलब पर ख़ुद इमामे अली अलैहिस्सलाम ताकीद करते हुए फ़रमाते हैंः ख़ुदाया मै सबसे पहले तेरी बारगाह में सज्दा–रेज़ हुआ मैने हक़ को सुना और सबसे पहले उस की आवाज़ पर लब्बैक कहा है।(बिहारूल अनवार, अल्लामा मजलिसी, जि 34 पेज 111

أناأول من أسلم،وأول من صلى مع رسول الله

इब्ने मर्दूयाह ये हज़रत अली अलैहिस्सलाम से रिवायत करते हैं "मैं सबसे पहला मुस्लमान हूँ और सबसे पहले रसूले अकरम के पीछे मैंने नमाज़ अदा की है। (मनाक़िब अली इब्ने अबी तालिब, इब्ने मर्दूयाह अल–असफहानी पेज 47, रक़म1

(أناأول من أسلم،وأول من صلى مع رسول الله)

इब्ने हिशाम सीरत नबवीयह में नक़ल करते हैं हज़रत अली इब्ने अबीतालिब पर ख़ुदा की ख़ास इनायतों में से एक ख़ास इनायत और ख़ुदा के उन पर फ़ज़लो–करम में से एक ये रहा है के क़ुरैश को शदीद बोहरान का शिकार होना पड़ा हज़रत अबू तालिब की औलादें ज़्यादा थीं। रसूलल्लाह अपने चचा जनाबे अब्बास {जिनके माली हालात अच्छी थी के पास आए और कहा क़हत से लोगों के हालात ख़राब हैं और आपके भाई अबू तालिब कसीरूल–अयाल हैं, हम मिलकर उनके बोझ को हल्का कर सकते हैं, चुनांचे उनके एक बेटे को आप और एक को मैं गोद लेता हूँ ताकि इस तरह उन पर से बच्चों का बोझ कम हो जाये}, जनाब अब्बास ने फ़रमाया; हाँ ऐसा ही है

जनाबे अब्बास रसूल अल्लाह के हमराह जनाब अबू तालिब के पास आए और जनाबे अब्बास व रसूलल्लाह ने जनाब अबू तालिब से कहा आप क्या कहते हैं? हम आप पर से आपके बच्चों का बोझ कुछ कम करना चाहते हैं, यहां तक कि लोगों पर से उन हालात का बादल छट जाये।
जनाब अबू तालिब ने फ़रमाया अक़ील के सिवा आप लोग जिसे भी इख़्तियार करें में तैयार हूँ। चुनांचे रसूले अकरम ने हज़रत अली अलैहिस्सलाम को और जनाबे अब्बास ने जनाबे जाफ़र का इंतिख़ाब किया। और तब से, हज़रत अली अलैहिस्सलाम हमेशा रसूलल्लाह के साथ रहे। बेअसत के बाद आप पर ईमान लाए, उनकी रिसालत की तसदीक़ की और आँहज़रत के नक़शे क़दम पर चलते रहे।

لسيرة النبوية، ابن هشام، المكتبة العصرية، بيروت، طبع عام 1423هـ-2002م، ج1، ص184-185. وقال ابن هشام في السيرة النبوية: ((وكان من نعمة الله على علي بن أبي طالب ومما صنع الله له وأراد به من الخير، أن قريشا أصابتهم أزمة شديدة، وكان أبو طالب ذا عيال كثير. فقال رسول الله (ص) للعباس عمه، وكان من أيسر بني هاشم: يا عباس إن أخاك أبا طالب كثير العيال، وقد أصاب الناس ما ترى من هذه الأزمة، فانطلق بنا إليه فلنخفف عنه من عياله، آخذ من بنيه رجلاً وتأخذ أنت رجلاً فنكفهما عنه. فقال العباس: نعم. فانطلقا حتى أتيا أبا طالب، فقالا له: إنا نريد أن نخفف من عيالك حتى ينكشف عن الناس ما هم فيه. فقال لهما أبو طالب: إذا تركتما لي عقيلاً فاصنعا ما شئتما. فأخذ رسول الله (ص) علياً فضمه إليه، وأخذ العباس جعفراً فضمه إليه، فلم يزل علي مع رسول الله (ص) حتى بعثه الله تبارك وتعالى نبياً، فاتبعه علي وآمن به وصدقه

निसाई अपनी किताब ख़साएस में ज़ैद बिन अर्क़म से रिवायत करते हैं रसूले अकरम पर सबसे पहले ईमान अली इब्ने अबी तालिब लाए हैं।

خصائص أمير المؤمنين علي بن أبي طالب، النسائي، ص20، رقم3و4. ((أول من أسلم مع رسول الله (ص) علي بن أبي طالب

मुहद्दिसीन की अक्सरीयत ये कहती है कि रसूलल्लाह पर सबसे पहले हज़रत अली अलैहिस्सलाम ईमान लाए और आपके नक़्शे क़दम पर चलते रहे। इस क़ौल की मुख़ालिफ़त करने वाले मुहद्दिसीन भी बहुत कम हैं। इस सिलसिले में हज़रत अली अलैहिस्सलाम ख़ुद फ़रमाते हैं मैं सिद्दीक़े अकबर हूँ, मैं फ़ारूक़े अव्वल हूँ, लोगों से क़बल में मुस्लमान हुआ और सबसे पहले मैंने नमाज़ अदा की है।

कुतुब अहादीस के मुतालेआ से ये हक़ीक़त बिलकुल वाज़ेह हो जाती है। वाक़दी और इब्ने जरीर तबरी जैसे बुज़ुर्ग उल्मा का यही नज़रिया है और साहिबे "अलइसतेआब" - अबू उमर यूसुफ़ बिन अबदुल्ला हुलनमरी उल–मारूफ़ बबुन अबदुल्बर ने भी इसी नज़रिया की ताईद की है

इब्ने असीर "असदुल्ग़ाबता मे नक़ल करते हैं कि अक्सर उल्मा के मुताबिक़ हज़रत अली अलैहिस्सलाम सबसे पहले मुस्लमान हैं।

وفي أسد الغابه: هو أول الناس إسلاماً في قول كثير من العلماء

इब्ने अबदुल्बर अलइसतेआब मैं लिखते हैं कि जनाबे सलमान, अबूज़र, मिक़्दाद , खब्बाब , जाबिर, अबी सईद ख़ुदरी और ज़ैद बिन अर्क़म से रिवायत है कि हज़रत अली अलैहिस–सलाम सबसे पहले मुस्लमान हैं और तमाम सहाबा ने हज़रत अली को दूसरे मुस्लमानों पर बरतरी दी है

इब्ने इसहाक़ कहते हैं मर्दों में सबसे पहले अल्लाह (की वहदानीयत) और इस के रसूल (की रिसालत) की गवाही हज़रत अली इब्ने अबी तालिब ने दी है

इब्ने शहाब के मुताबिक़ जनाबे ख़दीजा के बाद मर्दों में सबसे पहले हज़रत अली[अ0] ईमान लाए हैं। अलबत्ता इस बात पर सब इत्तेफ़ाक़ रखते हैं कि जनाबे ख़दीजा सबसे पहली मुस्लमान हैं। इब्ने शहाब ने जनाबे इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि हज़रत अली [अ0] में चार ख़ूबियां ऐसी हैं, जो उनके सिवा किसी में नहीं थीं

"अरब–व–अजम में सबसे पहले रसूलल्लाह के पीछे अली अलैहिस्सलाम ने नमाज़ अदा की, हज़रत अली अलैहिस्सलाम हर जंग में रसूलल्लाह के परचमदार थे, जब सारे मुस्लमान रसूलल्लाह को अकेला छोड़कर भाग गए थे उस वक़्त हज़रत अली ने सब्रो–इस्तेक़ामत के साथ रसूले खुदा की जान बचाई और रसूले अकरम को गुस्लो–कफ़न और उनकी तदफ़ीन भी हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने की है"।

इब्ने इसहाक़ जनाबे सलमान की ज़बानी, रसूले अकरम से रिवायत करते हैं कि रोज़े महशर सबसे पहले हौज़े कौसर पर मेरी मुलाक़ात इस उम्मत के पहले मुस्लमान अली इब्ने अबीतालिब से होगी। इस रिवायत को जनाबे सलमान से हाकिम ने मुस्तदरक में भी नक़ल किया है। और साहिबे "अल–इसतेआब इब्ने अब्बास से रिवायत करते हैं जनाबे ख़दीजा के बाद सबसे पहले रसूले अकरम के पीछे हज़रत अली इब्ने अबी तालिब[अ०] ने नमाज़ अदा की। और इसी किताब में इब्ने अब्बास से रिवायत है कि लोगों में जनाबे ख़दीजा के बाद सबसे पहले रसूलल्लाह पर ईमान लाने वाले जनाबे अली इब्ने अबी तालिब [अ०] हैं।

अबू उमरू इब्ने अबदुल्बर कहते हैं हदीस की सनद बिलकुल मोतबर और सही है लेहाज़ा इसके रावियों में तान की गुंजाइश नहीं है। इब्ने शहाब, अबदुल्लाह इब्ने मोहम्मद इब्ने अक़ील, क़तादा और इब्ने इसहाक़ कहते हैं मर्दों में सबसे पहले ईमान लाने वाले हज़रत अली [अ०] हैं। मुहद्दिसीन का इत्तेफ़ाक़ है कि अल्लाह और उसके रसूल पर सबसे पहले जनाबे ख़दीजा ईमान लाई और उनके बाद हज़रत अली[अ०] हैं। इब्ने अबदुल्बर कहते हैं, ये रिवायत अबी राफ़े से भी नक़ल हुई है। और अबी राफ़े की सनद से इब्ने अबदुल्बर नक़ल करते हैं कि मोहम्मद बिन काबुलकरज़ी से सवाल किया गया कि सबसे पहले हज़रत अली इस्लाम लाए या अबूबकर? वो बोले सुब्हान–अल्लाह {अजीब बात है, बे–शक अली का इस्लाम मुक़द्दम है और लोगों के शक–ओ–शुबह की वजह ये है कि हज़रत अली ने अपना ईमान पोशीदा रखा। और बिलाशुब्हा हमारे नज़दीक अली [अ०] ही पहले मुस्लमान हैं।

इब्ने अबदुल्बर ने क़तादा और हसन से रिवायत की है कि सबसे पहले मुस्लमान हज़रत अली [अ०] हैं। इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि मर्दों में अल्लाह–व–रसूल पर

सबसे पहले हज़रत अली ईमान लाए हैं। नीज़ क़तादा, हसन और दीगर मुहद्दिसीन से वो नक़ल करते हैं कि जनाबे ख़दीजा के बाद सबसे पहले ईमान लाने वाले हज़रत अली अ० हैं। और इब्ने अब्बास से रिवायत करते हैं सबसे पहले मुस्लमान हज़रत अली अ० हैं।

इब्ने अबदुल्बर, मुस्लिम मुलाई से अनस बिन मालिक की रिवायत नक़ल करते हैं कि रसूलल्लाह दोशंबा (सोमवार) को मबऊस हुए और सहशंबा (मंगलवार) को हज़रत अली अ० ने उनके पीछे नमाज़ अदा की है। हाकिम, मुस्तदरक मे अबदुल्लाह बिन बुरीदा और वो अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि दोशंबा को रसूलल्लाह पर वही नाज़िल हुई और सहशंबा को हज़रत अली अ० ने उनके पीछे नमाज़ अदा की है। नीज़ हाकिम अनस से रिवायत करते हैं कि दोशंबा को रसूल को नबुव्वत मिली और सहशंबा को अली ने इस्लाम की गवाही दी है।

निसाई अपनी ख़साएस में मुतअद्दिद अस्नाद से ज़ैद बिन अर्क़म से रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह के पीछे सबसे पहले हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अ० ने नमाज़ अदा की है। ज़ैद बिन अरक़म की दूसरी रिवायत में कहते हैं कि सबसे पहले मुस्लमान हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अ० हैं। हाकिम नैशापुरी ने मुस्तदरक में ज़ैद बिन अरक़म की रिवायत की तसहीह करते हुए नक़ल किया है कि हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अ० सबसे पहले मुस्लमान हैं। ज़हबी ने तल्ख़ीस मुस्तदरक में और इब्ने अबदुल्बर ने अल–इसतेआब में इस रिवायत को सही बताया है। अयानुश्शिआ, सैययद मोहसिनुल अमीन, जि 2, पे. 25–26)

मोहम्मद बिन इसहाक़ से रिवायत है कि मर्दों में सबसे पहले अल्लाह के नबी पर ईमान लाने वाले, उनके पीछे नमाज़ अदा करने वाले और अल्लाह के दीन को मुकम्मल क़बूल करने वाले हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अ० हैं जबकि उस वक़्त आप सिर्फ दस बरस के थे और हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अ० पर अल्लाह की ये नेअमत थी कि वो इस्लाम से क़बल भी रसूले अकरम की आग़ोशे मुबारक में परवरिश पा रहे थे। (अलमनाकिब, अलमौफिकुल ख्वारिज़मी मोअस्सतुल नश्रूल इसलामी, कुम, अलतबा अलख़ामस- 1425 हि, पेज 51, रक़म13.)

इब्ने इसहाक़ कहते हैं हज़रत अली [अ0] जिस वक़्त इस्लाम लाए, उनकी उम्र बीस साल की थी। (अलबदा व तारीख़, अहमअद बिन सुहैल अल बलख़ी, दारे सादिर, बैरूत, अलतबातुल अव्वल 1431हि0 2010ई, पेज372)

इब्ने क़सीर अपने अस्नाद से नक़ल करते हैं हज़रत अली अ0 सबसे पहले मुस्लमान थे और उस वक़्त उनकी उम्र सिर्फ़ नौ साल की थी। (अल–बदाया वल–नेहाया, इब्ने क़सीर, जि3 पेज 285)

इब्ने अब्बास कहते हैं नबी अकरम स0 के हमराह सबसे पहले इस्लाम क़बूल करने वाले अली अ0 हैं। (अल–कामिल फ़ील–तारीख़, इब्ने अल–असीर, जि1, पेज582)

इब्ने असीर असदुलग़ाबेता में मुतअद्दिद अस्नाद से इब्ने अब्बास और ज़ैद बिन अरक़म से नक़ल करते हैं कि सबसे पहले मुस्लमान हज़रत अली हैं। (असदुलग़ाबेता, इब्ने अल असीर, जि4, पे17)

और अबी बिन अरक़म से रिवायत है कि रसूलल्लाह स0 पर सबसे पहले ईमान लाने वाले अली बिन अबी तालिब अ0 हैं। (तारीख़ अलतिबरी, जदीद अलतिबरी, जि1, पे537)

क़ाज़ी मग़रिबी कहते हैं अली अलैहिस–सलाम अल्लाह और इस के रसूल पर उस वक़्त ईमान लाए जबकि लोग मुशरिक थे, अल्लाह के नबी की उन्होंने उस वक़्त तसदीक़ कि जब लोग उन्हें झुठला रहे थे। अली अ0 सबसे पहले मोमिन और इस्लाम में सब पर सबक़त रखते हैं, वो मुक़र्रबीन और सिद्दीक़ीन में से थे और ये उन्हीं का हक़ है कि उन्हें इन दो नामों मुक़र्रब–ओ–सिद्दीक़ से पुकारा जाये। और यही वजह है कि कहा जाता है कि क़ुरआन की जिस आयत में ऐ साहिबाने ईमान आया है इसके अव्वालीन मिस्दाक़ अली अ0 हैं। (अल–मनाक़िब वाल मसालिब, अल्काज़ी अलमुग़रिब, पे206)

तारीख़, सीरत और हदीस की तमाम बड़ी किताबों में ये दर्ज है कि इमाम अली अ0 सबसे पहले मुस्लमान हैं और इस शरफ़ में कोई भी उन पर सबक़त नहीं रखता और सिवाए अंगुश्त शुमार मुअर्रेख़ीन के किसी ने भी इस हक़ीक़त का इनकार नहीं किया है।

२. रसूल[स०] के साथ सबसे पहले नमाज़ पढ़ने वाले

इमाम अली अलैहिस्सलाम के फ़ज़ाएल और दूसरों पर उनकी बरतरी की दूसरी दलील ये है कि आप ने सबसे पहले रसूलल्लाह के पीछे नमाज़ अदा की है और ये बात मुतावातिर रिवायात से साबित है। मिनजुमला निसाई अपने अस्नाद से हिब्तुलअरफ़ी से नक़ल करते हैं कि मैंने हज़रत अली को कहते सुना है सबसे पहले रसूल अल्लाह के पीछे मैंने नमाज़ अदा की है।

(ख़साएस अमीरूल मोमनीन अली इब्ने अबी तालिब अ0, अलनिसाई, अलमकतबतह अलअसरीह, तबा 1424हि 2003ई, पे20)

ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत है कि रसूलल्ला के पीछे सबसे पहले नमाज़ अदा करने वाले हज़रत अली हैं। (ख़साएस अमीरूल मोमनीन अली इब्ने अबी तालिब अ0, अलनिसाई, अलमकतबतह अलअसरीह, तबा आम 1424, 2003 ई, पे20)

अमरो बिन मर्राह कहते हैं मैंने अबू हमज़ा को कहते सुना है कि मैंने ज़ैद बिन अरक़म से सुना है कि रसूल अल्लाह के पीछे नमाज़ अदा करने वाले सबसे पहले मर्द हज़रत अली हैं। (तारीख़ अल–तिबरी, इब्ने जरीर अलतिबरी, जि1 पे 537)

इबाद बिन अबदुल्लाह कहते हैं मैंने हज़रत अली अ0 को कहते सुना है कि मैं अल्लाह का बंदा हूँ, उस के रसूल का भाई हूँ, मै ही सिद्दीक़े अकबर हूँ, मेरे बाद इस लक़ब को ख़ुद से मंसूब करने वाला झूठा और इफ़्तिरा पर्दाज़ होगा, और लोगों से सात साल क़बल से मैंने रसूलल्लाह के साथ नमाज़ अदा की है। (तारीख़ अल–तिबरी, जि2 पे. 537 वालकामिल फ़ी अल–तारीख़, इब्ने अलअसीर, जि 1, पे582)

इब्ने मर्दूय हब्बा बिन जोयन से नक़ल करते हैं कि हज़रत अली अ0 ने फ़रमाया है रसूलल्लाह के साथ मैंने सात साल तक अल्लाह की इबादत की जबकि इस उम्मत में उस वक़्त कोई भी अल्लाह की इबादत नहीं करता था। (मनाक़िब अली इब्ने अबी तालिब अ0, अलइसफहानी, पे48, रक़म 4.)

इब्ने अब्बास कहते हैं रसूल अल्लाह के साथ सबसे पहले नमाज़ अदा करने वाले हज़रत अली अ0 हैं और जाबिर इब्ने अबदुल्लाह कहते हैं रसूल अल्लाह दोशंबा

को मबऊस ब रिसालत हुए और सहशंबा को अली अ0 ने उनके पीछे नमाज़ अदा की है। (अलकामिल फ़ी अल–तारीख़, जि1, पे582)

अलइसतेआब मे है कि हज़रत अली अ0 ने फ़रमाया है कि मैंने इतने इतने साल तक रसूल अल्लाह के साथ में नमाज़ अदा की और इस वक़्त जनाबे ख़दीजा के अलावा रसूले खुदा के हमराह कोई भी नमाज़ अदा करने वाला नहीं था।

और अल–इसतेआब मे हबत बिन जोयन की हज़रत अली की रिवायत है। आप फ़रमाते हैं इस उम्मत में मुझसे क़बल अल्लाह की इबादत करने वाला कोई भी नहीं है, मैंने पाँच या सात साल तक इस तरह अल्लाह की इबादत की है जबकि कोई भी इस की इबादत करने वाला नहीं था, नीज़ इसी अस्नाद से अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत है कि रसूले अकरम ने फ़रमाया सात साल तक फ़रिश्तों ने मुझ पर और अली अ0 पर दुरूदो–सलाम भेजा है, क्योंकि इस दौरान मर्दों में अली अ0 के सिवा कोई भी मेरे साथ नमाज़ अदा नहीं करता था।

ख़साएस में निसाई अपने अस्नाद से हज़रत अली अ0 से रिवायत करते हैं मैं लोगों से सात साल क़बल ईमान लाया, नीज़ अपने अस्नाद से हज़रत अली अ0 से वो रिवायत करते हैं रसूलल्लाह के बाद इस उम्मत में मुझसे क़बल किसी ने भी अल्लाह की इबादत नहीं की है, मैंने नौ साल अल्लाह की इबादत उस वक़्त की है जब इस उम्मत में से कोई भी अल्लाह की इबादत करने वाला नहीं था। ख़साएस के दीगर नुस्ख़ों में भी नौ साल हैं, लेकिन शायद लफ़्ज़ में तसहीफ़ हुई है, असल सात साल हैं। (आयानुश्शिया, अलसैययद मुहसिनुलअमीन, जि2, पे26)

हाकिम मुस्तदरक में अपनी सनद से इबाद बिन अबदुल्लाह असदी से और वो हज़रत अली अ0 से रिवायत करते हैं कि मैं अल्लाह का बंदा हूँ, मैं अल्लाह के रसूल का भाई हूँ, मैं सिद्दीक़े अकबर हूँ, मेरे बाद इस लक़ब को अपनाने वाला कज़्ज़ाब होगा, और लोगो से क़बल सात साल तक मैंने रसूलल्लाह के साथ नमाज़ अदा की जबकि इस उम्मत में कोई भी अल्लाह की इबादत करने वाला नहीं था। (आयानुश्शिया, अलसैययद मुहसिनुलअमीन, जि2,पे26)

हाकिम, हुबतुलअरफ़ी से रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत अली अ0 को कहते सुना है कि मैंने पाँच साल तक उस वक़्त अल्लाह की इबादत की जबकि इस

उम्मत का कोई भी अल्लाह की इबादत करने वाला नहीं था। हुबतुलअरफ़ी की अस्नाद से हाकिम की रिवायत है वो कहते हैं मैंने हज़रत अली को कहते सुना है कि: मैंने सबसे पहले रसूलल्लाह के साथ नमाज़ अदा की है और हाफ़िज़ निसाई ने भी ख़साएस में हुबतुल अरफ़ी से इस रिवायत को नक़ल किया है। (आयानुश्शिया, अलसैययद मुहसिनुलअमीन, जि2, पे25)

इब्ने अब्बास से रिवायत है कि रसूलल्लाह फ़रमाते हैं कि फ़रिश्तों ने मुझ पर और अली अ0 पर सात साल तक दुरूद भेजा है, वजह पूछी गई तो आपने फ़रमाया क्योंकि मर्दों में अली के अलावा मेरे साथ कोई भी न था।

मनाक़िब ख्वाहरज़मी में भी रिवायत है कि रसूलल्लाह फ़रमाते हैं सात साल तक फ़रिश्तों ने मुझ पर और अली अ0 पर दुरूद भेजा है और वो इसलिए रूए ज़मीन पर से आसमान तक मेरे और अली के सिवा "ला–इलाहा इल–लल्लाह की गवाही की सदा बुलंद करने वाला कोई न था। तबरी ने भी अपने ख़साएस में इस रिवायत को नक़ल किया है। (बिहारूल अनवार, अल्लामा मजलिसी, जि 38, पे 239)

मज़कूरा अहादीस–ओ–रवायात से वाज़ेह हो जाता है कि रसूलल्लाह के पीछे सबसे पहले नमाज़ अदा करने वाले हज़रत अली अ0 हैं और तमाम मुस्लमानों से सात साल क़बल आप ने नमाज़ अदा की है, क्योंकि नमाज़, शबे मेराज फ़र्ज़ हुई है और मेराज हिजरत के तीन साल पहले थी और (अलनी) बेअसत के बाद नबी ए अकरम ने सिर्फ दस साल मक्का में क़याम किया है और इस दौरान हज़रत अली अ0 रसूले अकरम के हमराह ग़ारे हेरा–या शेअब में जाया करते थे और इस तरह सात साल दोनों ने अल्लाह की इबादत की यहां तक कि नमाज़ का फ़रीज़ा नाज़िल हुआ।

३. नबी ए अकरम[स०] के पहले शागिर्द

हज़रत इमाम अली अलैहिस्सलाम की नशो नुमा आग़ोशे रसूले अकरम मे हुई और आप ने आंहज़रत से इस अरसे में बेशुमार फ़ैज़ हासिल किया है और आंहज़रत ने ही आप को मारेफत, अख़लाक़ और सुलूको–दानिश से माला माल किया है। आप ने आग़ोशे रिसालत में परवरिश पाई है। लेहाज़ा ये कहना दुरुस्त होगा कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम रसूले अकरम के सबसे पहले शागिर्द हैं।

क़ाज़ी मग़रिबी कहते हैं रसूले अकरम जब बड़े हुए और कमालओ–रशद के सिन पर पहुंच गए तो हज़रत अली अ0 को जनाब अबू तालिब अ0 से ले लिया, ताकि इस तरह जनाबे अबू तालिब अ0 को उनके एहसानात का बदला अदा कर सकें जो आप ने बचपन में रसूले अकरम की परवरिश और कफ़ालत में उनके साथ किए थे। लेहाज़ा जनाबे रसूले अकरम ने हज़रत अली अ0 की तरबियतो–परवरिश की, उन्हें बचपन से पाल पोस कर बड़ा किया और तरबियत में एक शफ़ीक़ बाप–व–मेहरबान भाई का किरदार निभाया और इस तरह इमाम अली अ0 आग़ोशे रसूले अकरम में तरबियत पाते रहे और आंहज़रत के आदाबो–अख़लाक़ सीखते रहे और एक लम्हा के लिए भी ना ग़ैरे खुदा के आगे सजदा किया और ना ही खुदा का कोई शरीक माना। (अलमनाकिब वलमसालिब, अल्काज़ी अलमग़रि, पे206)

हज़रत अली ने इस नुमायां हक़ीक़त की तरफ़ खुतबा कासा में इशारा फ़रमाया है; चुनांचे आप फ़रमाते हैं:

मैं आँहज़रत के साथ उसी तरह रहता था जिस तरह ऊंटनी का बच्चा अपनी माँ के हमराह होता है। आप हर–रोज़ मुझे अख़लाक़ का एक बाब सिखाते थे और मुझे इस पर अमल का हुक्म देते थे। वो हर साल ग़ारे–हेरा में इबादत करते थे और उन्हें मेरे सिवा कोई भी वहां नहीं देखता था। रसूलल्लाह जनाबे ख़दीजा और मेरे सिवा कुरैश में कोई एक भी अल्लाह की इबादत करने वाला नहीं था और इस वक़्त मै नूरे रिसालत को देखता था, इतरे नुबुव्वत को सूँघता था। जब पहली बार आँहज़रत पर वही हुई तो मैंने शैतान की चीख़ को सुना, रसूले

अकरम से मैंने दरयाफ़्त किया ऐ अल्लाह के नबी ये चीख़ किस की है? तो आंहज़रत ने फ़रमाया ये शैतान की चीख़ है। वो अपनी इबादत से मायूस हो चुका है। ऐ अली आप भी वो सुनते हैं जो मैं सुनता हूँ और वो देखते हैं जो मैं देखता हूँ, बस फ़र्क़ ये है कि आप नबी नहीं हैं, बल्कि आप मेरे वज़ीर–ओ–जांनशीन हैं और आप ख़ैर पर हैं। (नहजुलबलाग़ा, जि1, पे442, रक़म अलखुतबा192)

इमाम अली अलैहिस्सलाम हर जगह अपने उस्ताद नबी ए अकरम के साथ रहते थे। घर में मस्जिद में, वादियों में सहराओं में और जंगों में।

हज़रत अली अ0 हर–रोज़ सुबह–ओ–शाम रसूले अकरम स0 की ख़िदमत में आते थे और आंहज़रत से कसबे उलूम–ओ–मआरिफ़ किया करते थे। आप फरमाते हैंः रसूले अकरम स0 ने मुझे के एक हज़ार बाब सिखाए और हर बाब से के हज़ार बाब खुलते थे (शरह अलअखबार, अल्काज़ी अलनोमान अलमग़रि, जि2, पे308, रक़म629) इसी तरह की दूसरी हदीस में आप ने फ़रमाया है रसूलल्लाह ने मुझे के हज़ार बाब की तालीम दी और मैं हर बाबे से हज़ार बाब खोलता था। (बिहारूलअनवार, जि.69, पे183)

इमाम अली अलैहिस्सलाम रसूले अकरम के शागिर्द, आपके उलूम–ओ–मआरिफ़ के ख़ाज़िन और इसरारे नबुव्वत के राज़–दार थे। चुनांचे रसूले अकरम स0 फ़रमाते हैं मैं शहरे हूँ और अली अ0 उस का दरवाज़ा हैं, जो कोई भी शहरे से फ़ैज़याब होना चाहता है उसे उस के दरवाज़ा से ही आना होगा। (तोहफ़लउकूल, इब्ने शाबत अलहरानी, पे317)

दूसरी रिवायत में फ़रमाते हैं : मैं शहरे हूँ और अली अ0 उस का दरवाज़ा हैं और शहर में दरवाज़े से ही दाख़िल हुआ जाता है। (अल–तौहीद, अल–शेखुसुदूक, पे307)

४. सबसे पहले कातिबे वही

कितने लोग कातिबे वही थे? इस सिलसिले में मौरख़्रीन की राय मुख़्तलिफ़ है क्योंकि बाअज़ मौरख़्रीन ने कातबाने वही और रसूले अकरम स0 के दीगर उमूर के क़ातिबों के दरमियान इशतेबाह किया है। लेकिन इन तमाम इख़्तिलाफ़ में इस बात पर सब मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम वही के सबसे पहले कातिब हैं। रसूले अकरम स0 पर रात हो या दिन, जिस वक़्त भी वही नाज़िल होती थी, जनाबे रसूले खुदा स0 सबसे पहले हज़रत अली अ0 को इस की ख़बर देते थे।

इस सिलसिले में हज़रत अली अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

मुझे कुरआन के नासिख़–ओ–मंसूख़, मोहकम–ओ–मुतशाबेह, आयात का फ़िसाल–ओ–विसाल और इस के हुरूफ़–ओ–मआनी का है। कसम खुदा की रसूले अकरम स0 पर नाज़िल होने वाले हर हर्फ़ का मुझे है, वो किस के बारे में नाज़िल हुआ, किस दिन नाज़िल हुआ, किस जगह नाज़िल हुआ?। वाय हो उन पर, क्या उन लोगों ने ये आयत नहीं पढ़ी है (إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى) (सूरह आला, आयत 18–19) कसम खुदा की ये मैंने रसूले अकरम स0 से विरासत में लिया है और रसूले अकरम स0 ने जनाबे इब्राहीम–ओ–मूसा अलैहिमुस्सलाम से विरासत में लिया है। वाए हो उन पर, क़सम खुदा की मैं वो हूँ जिसके लिए अल्लाह ने ये आयत नाज़िल की है (وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ) (सूरह अलहाक, आयत 12) हम रसूलल्लाह स0 की बज़्म में होते थे और आंहज़रत पर वही नाज़िल होती थी, मैं समझता था और दूसरे लोग नहीं समझ पाते थे। और जब हम आंहज़रत स0 की बज़्म से बाहर निकलते थे तो लोग कहते थेः अभी क्या कहा रसूलल्लाह स0 ने?। (बिहारूल अनवार, जि40, पे138, रक़्म31)

लेहाज़ा इमामे अली अलैहिस्सलाम रसूले अकरम स0 से क़रीब थे और बैते नबुव्वत में जो कुछ भी होता था, आप को इस की ख़बर रहती थी और रसूलल्लाह स0 भी हर वही के नाज़िल होने के बाद हज़रत अली अ0 को बताते थे और आप उसे लिख कर उस की हिफ़ाज़त करते थे।

५. कुरआन–ए–मजीद के सबसे पहले मुदव्वन

नबी ए अकरम की वफ़ात के बाद कुरआन–ए–मजीद को तर्तीबे नुजूल के ऐतबार से सबसे पहले हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने जमा किया है। और ये बात शिया–ओ–सुन्नी दोनों वास्तों से मुतवातिर–ओ–बेशुमार हदीसों से साबित है

किताब इत्तेक़ान में रिवायत है कि नबी ए अकरम स0 की वफ़ात के बाद सबसे पहले कुरान की तदवीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम ने की है। इब्ने अबी दाउद "अल–मसाहफ़ में इब्ने सीरीन से रिवायत करते हैं कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब रसूले अकरम स0 की वफ़ात हुई तो मैंने अह्द किया कि मैं अपने दोश पर नमाज़ के सिवा अबा नहीं रखूँगा, जब तक कुरआन–ए–मजीद जमा ना करलूं, और फिर मैंने कुरआन–ए–मजीद की जमा आवरी की। इब्ने हिज्र ने इस रिवायत को सनद में ख़लल के बाएस ज़ईफ़ बताया तो सेवती ने अलअतकान" में जवाब दिया कि ये रिवायत दूसरे वास्तों से भी नक़ल हुई है। चुनांचे इब्ने ज़रेस अपनी किताब फ़ज़ाएल मे बशर बिन मूसा से, उन्होंने हुदा बिन ख़लीफ़ा से, उन्होंने औन से, उन्होंने मोहम्मद बिन सीरीन से, और उन्होंने अकरमा से नक़ल किया है अबूबकर की बैअत के वक़्त हज़रत अली इब्ने अबी तालिब ख़ाना नशीन हुए तो, अबूबकर से कहा गया अली अ0 को आपकी बैअत से गुरेज़ है, अबूबकर ने उन्हें बुला कर पूछा आप क्यों मेरी बैअत को नहीं आए? हज़रत अली अ0 ने फ़रमायाः मैंने देखा कि किताबे खुदा में तब्दीलियों का इमकान है, तो मैंने अह्द किया कि नमाज़ के अलावा अपने दोश पर अबा नहीं डालूँगा जब तक कि कुरआन–ए–मजीद की जमा आवरी न कर लूं।

नीज़ सेवती कहते हैं कि इब्ने अशता ने "अल–मसाहेफ़ में इब्ने सीरीन के दूसरे सिलसिला ए सनद से भी नक़ल किया है। वो रिवायत करते हैं कि उन्होंने (हज़रत अली अ0 ने) अपनी मुसहफ़ में नासिख़–ओ–मंसूख़ को भी बयान किया है। और इब्ने सीरीन कहते हैं मैं इस किताब (मुसहफ़ इमाम अली अ0) को तलाश किया और मदीने में भी इसकी जुस्तजू की लेकिन वो दस्तयाब नहीं हुई।

इब्ने–ए–साद के अलावा इब्ने अबदुल्बर ने "अलइसतेआब मैं इब्ने सीरीन से रिवायत की है कि मैंने सुना है कि हज़रत अली अ0 ने अबूबकर की बैअत में

ताख़ीर की तो अबूबकर ने कहा कि क्या आपको मेरी ख़िलाफ़त नापसंद है? हज़रत अली ने जवाब दिया मैंने खुद से अह्द किया है कि अपने दोश पर उस वक़्त तक अबा नहीं डालूँगा जब तक कुरआन–ए–मजीद की जमा आवरी ना करूँ। वो इब्ने सीरीन कहते हैं लोगों का ख़याल ये है कि हज़रत अली ने तर्तीबे नुज़ूल के एतबार से कुरआन को जमा किया था।

इब्ने सीरीन कहते हैं कि अगर वो किताब मिल जाती तो, का ज़ख़ीरा था

इब्ने औफ़ कहते हैं कि मैंने अक्रमा से इस किताब के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मुझे इस का नहीं है।

"अल–अतकान ही की रिवायत है कि इब्ने हिज्र कहते हैं कि एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने नबी ए अकरम की वफ़ात के बाद कुरआन–ए–मजीद को तर्तीबे नुज़ूल के ऐतबार से जमा किया है। और इस रिवायत को अबी दाऊद ने भी नक़ल किया है।

अबू नईम की अल–हिलिया में और "अलख़तीब ने "अल–अरबईन में सादी के सिलसिल ए सनद से और अबद ख़ैर की रिवायत हज़रत अली अ0 से नक़ल की है कि जब रसूलल्लाह स0 की वफ़ात हुई तो मैंने क़सम खाई थी कि जब तक कुरआन–ए–मजीद को दो दफ़्तियों के दरमियान जमा ना कर लूं, अपने दोश पर अबा नहीं डालूँगा, और जमा के अलावा मैंने उस वक़्त तक अपने दोश पर अबा नहीं डाली जब तक कुरआन को जमा नहीं कर लिया।

इब्ने नदीम अपनी फ़ेहरिस्त मे अबद ख़ैर से हज़रत अली अलैहिस्सलाम की रिवायत नक़ल करते हैं नबी ए अकरम स0 की वफ़ात के वक़्त हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने लोगों के दरमियान पराकंदगी महसूस की तो अह्द किया कि जब तक कुरआन–ए–मजीद की जमा आवरी ना कर लें वो अपने दोश पर अबा नहीं डालेंगे। चुनांचे तीन दिन तक मुसलसल अपने घर में बैठ कर कुरआन–ए–मजीद की जमा आवरी की और ये वो पहला कुरआन–ए–मजीद है जिसे हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने अपने हाफ़िज़ा से जमा किया है और ये कुरआन जनाबे जाफर (सादिक़) के वारिसों के पास है।

मनाक़िब इब्ने शहर–आशोब में अहलेबैत अ0 की रिवायतों के मुताबिक़ हज़रत अली अ0 ने खुद से अह्द किया कि नमाज़ के अलावा वो अपने दोश पर अबा नहीं रखेंगे, जब तक कि वो कुरआन–ए–मजीद को जमा ना कर लें और जब तक आप ने ये अज़म मुकम्मल नहीं किया, लोगों से दूर रहे यहां तक कि कुरआन को जमा कर लिया।

मनाक़िब ही में इब्ने शहर–आशोब नक़ल करते हैं हदीसो–तफ़सीर में अहले सुन्नत के इमाम शीराज़ी अपनी तफ़सीर में और अबू यूसुफ़ याकूब अपनी तफ़सीर में क़ौले खुदावंद(ان علینا جمعه وقرآنه) (सूरह अलकियामा, आयत 17) के ज़ेल में इब्ने अब्बास की रिवायत नक़ल करते हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल को ये इतमीनान दिया कि उनके बाद कुरआन–ए–मजीद की तदवीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अ0 करेंगे। इब्ने अब्बास कहते हैं अल्लाह ने क़लबे अली अ0 पर मुकम्मल कुरआन का इलहाम किया और हज़रत अली अ0 ने रसूलल्लाह स0 की वफ़ात के बाद छः महीनों में कुरआन को जमा किया।

अबी राफ़े से रिवायत है कि नबी ए अकरम स0 ने वफ़ात से क़बल बीमारी के दौरान हज़रत अली अ0 से फ़रमाया ऐ अली ये अल्लाह की किताब है उसे अपने पास रखो, हज़रत अली ने तमाम नविश्तों को एक कपड़े से लपेटा अपने साथ ले गए और रसूल–ए–खुदा स0 इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए तो हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने नुजूल की तर्तीब के ऐतबार से उन्हें जमा किया और अली अलैहिस्सलाम को इस का मुकम्मल था।

इब्ने शहर–आशोब कहते हैं कि अबू अला अतार और मोवफिफ़क़ ख़तीब ख्वाह रज़मी ने अपनी किताबों में अली इब्ने अरबाह से रिवायत की है कि रसूलल्लाह स0 ने हज़रत अली अलैहिस्सलाम को कुरआन जमा करने का हुक्म दिया और उन्होंने उसे लिख कर उस की जमावरी की।

इब्ने शहर–आशोब "अलमुआलम मे कहते हैं हक़ ये है कि इस्लाम में सबसे पहले अल्लाह जल्ले जलालुहू की किताब की तदवीन हज़रत अली अ0 ने की है।

इब्ने मुनादी से रिवायत है कि हज़रत अली अ0 ने तीन रोज़ तक अपने घर में बैठ कर कुरआन को जमा किया और ये इस्लाम के सबसे पहली मुसहफ़ है

जिसे अली अ0 ने अपने हाफ़िज़ा से जमा किया। (आयानुश्शिया, अलसैययद मुहसिनुलअमीन, जि7, पे345–346)

इमामे बाक़िर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं झूठा है वो शख़्स जो ये दावा करे कि उसने पूरा कुरआन जमा किया है। हज़रत अली अलैहिस्सलाम और उनके बाद इमामों के सिवा कुरआन को इस तरह जैसा कि अल्लाह तबारका–व–तआला ने नाज़िल किया है, किसी ने भी जमा नहीं किया। (उसूले काफ़ी, अलशेख़ अल्कलीनी, जि1, पे284, रक़म1)

बाअज़ रिवायात के मुताबिक़ हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने रसूले अकरम स0 की ज़िंदगी में ही कुरआन–ए–मजीद को जमा किया था और आंहज़रत की वफ़ात के बाद तर्तीबे नुजूल के ऐतबार से जमा किया था।

सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं, "जैसा कि इब्ने अबी अलहदीद कहते हैं कि हज़रत अली अ0 रसूलल्लाह की हयात में कुरआन को हिफ़्ज़ करते थे और उनके सिवा कोई भी हिफ़्ज़ नहीं करता था। और आप ही हैं जिसने सबसे पहले कुरआन–ए–मजीद को जमा किया है। सबने ये नक़ल किया है कि हज़रत अली अ0 ने अबूबकर की बैअत में ताख़ीर की है और अहले हदीस की राय शियों की राय के मुख़तलिफ़ है क्योंकि शिया कहते हैं कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने ताख़ीर इसलिए की क्योंकि वो कुरआन–ए–मजीद की तदवीन व जमा आवरी में मशगूल थे ये राय इब्ने अबी अलहदीद की है और शियों का इस से कोई ताल्लुक़ नहीं है क्योंकि हम शियों के अक़ीदे के मुताबिक़ हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने कभी भी खलीफ़ा–ए–सलासा को ख़लीफ़ा ए बरहक़ तस्लीम ही नहीं किया था। और अलबत्ता ज़रूरत के पेशे नज़र और इस्लाम की बक़ा–ओ–हयात के लिए आप दरबार में भी जाते थे और अपने क़ीमती–ओ–मुफ़ीद मश्वरा भी देते थे, ताकि इस तरह इस्लाम का तहफ़्फ़ुज़ कर सकें। लेहाज़ा इन ताबीरों से हरगिज़ ग़लतफ़हमी नहीं होनी चाहिए कि हम शियों का ऐसा कोई अक़ीदा है और ये दलील है कि सबसे पहले कुरआन की जमा आवरी उन्होंने की है, क्योंकि कुरआन अगर पैगम्बरे अकरम स0 की ज़िंदगी में जमा हुआ होता तो हरगिज़ आंहज़रत की वफ़ात के बाद तदवीन की ज़रूरत ना होती। और क़िरअतों की किताबों के मुतालेआ से अंदाज़ा होता है कि अबू उम्रूअला–ए–आसिम बिन अबी अलनखूद वगैरा जैसे अइम्माए क़िरअत का मरजा हज़रत अली अ0 ही हैं

क्योंकि इन तमाम अइम्मा क़िरअत का मरज्जा क़ारी अबी अबदी अर्रहमान सलमी हैं और अबू अबदुर्रहमान सलमी ने फ़ने क़िरअत हज़रत अली अ0 से सीखा है और इस तरह फ़ने क़िरअत भी इन फ़ुनून में से है जिनकी बाज़गश्त हज़रत अली अ0 पर होती है। (शरह नहजुलबलाग़ा, इब्ने अलहदीद, जि1, पे43–44)

और इब्ने शहर–आशोब मनाक़िब लिखते हैं

फ़ने क़िरआत में कर्राए सुबअ का मरज्जा आप (अली ए मुर्तज़ा अलैहिस्सलाम) ही हैं। चुनांचे हमज़ा और कसाई ने अपनी क़िरअत हज़रत अली और इब्ने मसऊद की क़िरअत के मुताबिक़ रखी है, अलबत्ता इन दोनों की मुसहफ़ इब्ने मसऊद के मुसहफ़ के मुताबिक़ नहीं है, बल्कि उनके मुसहफ़ का मरज्जा हज़रत अली हैं और इब्ने मसऊद की मुसहफ़ से सिर्फ एराब की मुताबिक़त की है। और इब्न मसऊद खुद कहते हैं कि मैंने अली बिन अबी तालिब से बेहतर कोई क़ारिए कुरआन नही पाया।

और नाफ़े, इब्ने कसीर और अमरो की क़िरअत में बेशतर हिस्सों का मरज्जा इब्ने अब्बास हैं और इब्ने अब्बास ने फ़न क़िरअत अबी बिन काब और हज़रत अली से सीखा है। और उन क़ारीयों की क़िरअत अबी बिन काब की क़िरअत से मुख़्तलिफ़ नहीं है, इस का मतलब ये है कि उनकी क़िरअत का मरज्जा हज़रत अली ही हैं।

और आसिम ने फ़न क़िरअत अबी अबदुर्रहमान सलमी से सीखा है और अबदुर्रहमान कहते हैं कि मैंने पूरा कुरआन हज़रत अली बिन अबी तालिब की ख़िदमत में पढ़ा है। यही वजह है कि माहिरीन फ़न क़िरअत का कहना है कि सबसे फ़सीह क़िरअत आसिम की है क्योंकि उन्होंने नुज़ूल के मुताबिक़ क़िरअत की है और जिन जगहों पर दूसरे कारीयों ने इदग़ाम किया, आसिम ने इन जगहों पर इज़हार किया है और दूसरे कारीयों ने जिन जगहों पर हमज़ा की तरकेक की है उन्होंने उसे ज़ाहिर कर के पढ़ा है और जिन अलिफ़ों को दूसरे कारीयों ने अम्माला की शक्ल में अदा किया है आसिम ने फ़तहा की शक्ल में अदा किया है और कुरआन–ए–मजीद (आयात) का कूफ़ी अदद हज़रत अली से

ही मंसूब है और सहाबा में उनके सिवा कोई भी इस अदद का क़ाइल नहीं है। (अल–मनाकिब, इब्ने आशूब, जि2, स52)

लिहाज़ा इन तमाम बातों से ये वाज़िह हो जाता है कि हज़रत अली ने सबसे पहले कुरआन–ए–मजीद की तदवीन की है और आप पूरे कुरआन के हाफ़िज़ थे और क़िरा–ए–सबह का मुरज्जा भी इमाम अली हैं।

६. नबी अकरम[स०] की सबसे पहले बैअत

मोअर्रेख़ीन ने लिखा है कि सबसे पहले नबी अकरम स0 की बैअत और उनकी नुसरत का ऐलान हज़रत अली ने किया है। अबूबकर शीराज़ी ने अपनी किताब में जनाब जाबिर अंसारी से रिवायत की है कि सबसे पहले बैअत अमीर–ऊल–मोमनीन (हज़रत अली अलैहिस–सलाम ने की इसके बाद सिनान अबद अल्लाह बिन वह्ब असदी और उनके बाद जनाब सलमान फ़ारसी ने की है और लैस की रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अली के बाद, सबसे पहले बैअत जनाब अम्मार की थी। और तमाम मुस्लमानों पर बरतरी हज़रत अली अलैहिस–सलाम को आया शरीफा

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعْداً عَلَيْهِ حَقّاً فِي التَّوْرَاةِ وَالإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ

"(सूराह तौबा आयत 111) के ज़रीया हासिल है क्योंकि इस आयत में अल्लाह ने बैअत के जिन आसार–ओ–नताइज को बयान किया है वो बस हज़रत अली पर पूरे होते हैं।

तमाम रावियों ने जनाब जाबिर से रिवायत की है, वो फ़रमाते हैं हमने रसूल अल्लाह स0 के हाथों पर मरते दम तक की बैअत की है। नस्वी की किताब मार्फ़त में है कि सलमा बिन उक़्वा से पूछा गया कि दरख़्त के नीचे आप लोगों ने किस तरह की बैअत की थी।

उन्होंने जवाब दिया मरते दम तक साथ देने की

बसरीयों से रिवायत है कि अहमद बिन यसार कहते हैं हुदैबिया में रसूल–ए–खूदा के दस्त मुबारक पर बैअत करने वालों ने कभी मैदान ना छोड़ने का वाअदा किया था, और सही रिवायात से साबित है कि हज़रत अली हर मैदान में साबित–क़दम रहे लेकिन दूसरों ने ऐसा नहीं किया। इस के अलावा अल्लाह ने आयत में सिर्फ साहिबान ईमान के लिए अपनी खुशनुदी को नाज़िल किया है और जबकि इब्ने अबी ओफ़ी के मुताबिक़ बैअत करने वाले एक हज़ार

तीन सौ थे, जनाब जाबिर के मुताबिक़ एक हज़ार चार–सौ थे, इब्ने मसीब के मुताबिक़ एक हज़ार पाँच सौ थे और जनाब इब्ने अब्बास के मुताबिक़ एक हज़ार छः सौ लोगों ने रसूल अकरम स0 के हाथ पर बैअत की थी , और इस में भी कोई शक नहीं है कि उनके दरमयान जब बिन क़ैस, अबद अल्लाह बिन अबी सलूल जैसे मुनाफ़क़ीन भी थे और अल्लाह ने भी मोमिनीन पर अपनी रज़ा–ओ–खुशनुदी को आयत में शर्तों के साथ बयान किया है जैसे कि फ़रमाया है فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ(सूरह फ़तीा, आयत 18)

सदी और मुजाहिद कहते हैं वो शख़्स जो सबसे पहले अल्लाह की बैअत के बाद राज़ी हुआ वो हज़रत अली हैं क्योंकि अल्लाह को उनके दिल की सदाक़त–ओ–वफ़ादारी का था। अलमनाकिब, इब्ने आशूब, जि2, पे28–29)

७. सबसे पहले वसी का ख़िताब

रसूल अकरम स0 ने इस्लाम के पहले दिन ही से हज़रत अली अलैहिस–सलाम को अपने वसी होने का ख़िताब दिया। इस दिन जब आपने अपने क़रीबी रिश्तेदारों को दावत–ए–इसलाम दी थी। आनहज़रत स0 ने अपने रिश्तेदारों के सामने हज़रत अली के हाथों को पकड़ कर फरमाया थाः ये मेरा भाई, मेरा वसी, मेरा वज़ीर और तुम्हारे दरमियान मेरा जांनशीन है, इस की बातों की सुनो और इस की इताअत करो। (अमाली, शेख़ तूसी, मोअससासुल–तारीख़ अलअरबी, बेरूत, तबा अववल 1430हि 2009ई, पे447, रक़म1206)

हज़रत अली अलैहिस–सलाम रसूल अल्लाह स0 के वसी और जांनशीन थे। आनहज़रतऐ ने अपने अस्हाब को एक दूसरे का भाई बनाया लेकिन हज़रत अली को किसी का भाई नहीं बनाया। जब हज़रत अली ने कहा कि ए रसूल अल्लाह मैं अकेला ही हूँ मुझे किसी का भाई नहीं बनाया तो आप अ0 ने फ़रमायाः

मैंने तुम्हें अपने लिए रोक रखा है, तुम दुनिया और आख़िरत दोनों में मेरे भाई हो। तुम मेरे वसी, मेरे बाद मेरे जांनशीन और मेरे अहल–ए–बैत की बाक़ीमांदा बेहतरीन निशानी हो, तुम्हारी निसबत मुझसे हारून की मूसा जैसी है बस मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा। (अलमनाकिब वालमसालिब, अल्काज़ी अलमग़रिबी, मोअससा सातुल अलामी, बेरूत, अलतबा अववल 1423हि 2002ई, पे207)

ये बात रसूल अल्लाह स0 बार–बार कहा करते थे और अपने क़ौल–ओ–फ़ेअल और अपने रवैय्या के ज़रीए मुसलसल इस हक़ीक़त की ताकीद किया करते थे, और बेशुमार हदीसें भी इस बात की ताईद में मौजूद हैं। लिहाज़ा सबसे पहले वसिए रसूल स0 का लक़ब हज़रत अली को मिला और खुद रसूल अकरम स0 ने आप को इस लक़ब से नवाज़ा है।

रसूल अकरम स0 की वफ़ात के बाद हज़रत इमाम अली अलैहिस–सलाम को ख़िलाफ़त–ओ–वसीए रसूल होने का मन्सब अल्लाह के हुक्म से मिला है, जैसा कि कुरआन–ए–मजीद की इस आया मुबारका में इशारा हैः

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ (सूर अलमायद, आयत 67)

क्योंकि हज़रत अली इमामत–ओ–क़ियादत के तमाम शराएत रखते थे और इस्मत, –ओ–कमाल वग़ैरा जैसी वह तमाम सिफ़ात व कमालात आप में मौजूद थे जो एक वाजिबुल इताअत इमाम में होना चाहिऐं, और रसूल अल्लाह स0 ने ग़दीरे खुम के मशहूर वाक़िया में, अपने बाद अपने जांनशीन का ऐलान भी कर दिया था।

वाक़िया ग़दीरे खुम एक ऐसी हक़ीक़त है, जिसमें ना किसी शक की गुंजाइश है और ना उस का इनकार मुम्किन है। शिया और सुन्नी दोनों ही फ़िर्क़ों के मुहद्दिसीन नक़ल करते हैं कि रसूल अकरम स0 ने ग़दीरे खुम में फ़रमाया थाः

من كنت مولاه فعلي مولاه، اللهم وال من والاه، وعاد من عاداه، وانصر من نصره، واخذل من خذله، وأدر الحق معه حيث دار

'मैं जिसका मौला हूँ अली भी उसके मौला हैं, ए अल्लाह तो उसे दोस्त रख़ जो अली को दोस्त रखे, और जो अली से अदावत रखे, तो उससे अदावत रख, उस की नुसरत कर जो अली की मदद करे और जो अली को ख़ार करे तो उसे रुस्वा कर और जिस तरफ़ अली जाएं हक़ को उसी सिम्त मोड़ दे (दाइमुल इसलाम, अल्काज़ी अलमग़रिबी, जि1,पे2)

अल्लामा अमीनी अपनी अज़ीम किताब अलग़दीर फ़ील–किताब, वल सुन्नाता वलआदाब में फ़रमाते हैं कि हदीस ग़दीर को एक सौ दस सहाबी, चौरासी ताबईन ने नक़ल किया है और तीन सौ साठ उलेमा और मुहद्दिसीन ने नक़ल किया है। इस से ये साबित होती है कि हदीस ग़दीर एक मोतबर और मुतवातिर रिवायत है। चुनांचे ये रिवायत सेहत, तवातर और सनद के ऐतबार से इस मुक़ाम पर है कि कोई उस का इनकार नहीं कर सकता।

८. इस्लाम में सबसे पहले इमाम

इस्लाम में सबसे पहले जिसको इमाम का लक़ब मिला वो हज़रत अली अलैहिस–सलाम हैं। इस मुक़ाम पर इमाम से मुराद क़ियादत–ओ–सरबराही है जिसमें तमाम मुस्लमानों पर उनके क़ौल–ओ–फ़ेअल की इत्तिबा वाजिब है और ये इमामत वही ख़िलाफ़त–ओ–जा नशीनी पैग़ंबर अ0 है। लिहाज़ा हज़रत अली बाद पैग़ंबर अकरम अ0 मुस्लमानों के सरबराह और इमाम हैं।

रसूल अल्लाह अ0 ने हज़रत अली अलैहिस–सलाम के लिए इमाम का लफ़्ज़ अपनी वफ़ात से क़बल, उस वक़्त इस्तिमाल किया जब आप ने उनके कुछ वाज़ेह सिफ़ात–ओ–कमालात की तरफ़ इशारा फ़रमाया

शाबी कहते हैं हज़रत अली अ0 का बयान है कि नबीए अकरम अ0 ने मुझे आता हुआ देखकर फ़रमाया मरहबा ऐ मुस्लमानों के सरदार और परहेज़गारों के इमाम। (अलमनाकिब, इब्ने आशूब, जि3, पे19, वलयक़ीन, इब्ने ताउस, मोअस्सासाता दारूल किताब, क़ुम, अलतबातुल अव्वल आम1413 हि, पे471)

अब्दुल्लाह बिन ज़ुरारा से रिवायत है कि रसूल अकरम स0 ने फ़रमाया है अली के फ़ज़ल में मुझ पर तीन बातें नाज़िल हुई हैं; वो मुस्लमानों के सैय्यदो सर्बराह, परहेज़गारों के इमाम और गैरतमंदों के रहबर हैं। (मनाक़िब अली बिन अबी तालिब, अल असफहानी पे58, रक़म20)

बाअज़ मुक़ाम पर आप ने हज़रत अली को नेको कारों का इमाम कहा है। जनाब जाबिर से रिवायत है कि रसूल अकरम स0 ने हज़रत अली अलैहिस–सलाम के हाथों को थाम कर फ़रमाया ये नेकोकारों के इमाम और फ़ाजिरों से जंग करने वाले हैं। जिसने उनकी मुख़ालिफ़त की वो ज़लील है और जिसने उनकी नुसरत की, अल्लाह उस की मदद करेगा (यनाबेउल मोअद्दा, अलकंदूज़ी, जि2, पे214 वालमुस्तदरक अलस सहीहैन, जि3, पे140, रक़म4644)

९. सबसे पहले अमीर–ऊल–मोमनीन

रसूल अकरम स0 ने अपनी ज़िंदगी ही में हज़रत अली अलैहिस–सलाम को अमीर–ऊल–मोमनीन के लक़ब से नवाज़ा था। सबसे पहले आप इस लक़ब की ज़ीनत बने, चुनांचे अगर कहीं अमीर–ऊल–मोमनीन का लफ़्ज़ इस्तिमाल हो तो इस का मफ़हूम सिर्फ़ हज़रत अली ही होंगे।

रसूल अकरम स0 से रिवायत है कि आप ने हज़रत अली से फ़रमाया आप मुस्लमानों के इमाम, मोमिनीन के अमीर, तमाम ताबिंदा पेशानी वालों के क़ाइद, मेरे बाद तमाम मख़लूक़ात पर खुदा की हुज्जत, तमाम वसियों के सरबराह और तमाम नबियों के सैय्यद–व–सरदार के वसी–व–जांनशीन हैं। (अलतहसीन, इब्ने ताउस्, मोअस्सासते दारूल किताब अलतबाअत वलनशर, कुम, अलतबातुल अव्वल 1413 हि, पे563)

हज़रत अली अलैहिस–सलाम के सिलसिले में आप फ़रमाते हैंः वो {अली तमाम मुस्लमानों के इमाम, मोमिनीन के अमीर, और मेरे बाद इन सब के मौला–ओ–हाकिम हैं। (बिहारूलअनवार, अल्लामा मजलसी, जि8, पे22, रक़म14)

अनस बिन मालिक के सिलसिला में रिवायत की गई है कि रसूल अल्लाह स0 ने फ़रमाया मुझे वुज़ू के लिए पानी दो, चुनांचे आप ने वुज़ू किया और दो रकात नमाज़ अदा की और फिर फ़रमाया ऐ अनस इस दरवाज़ा से सबसे पहले दाख़लि होने वाले सारे मोमिनीन के अमीर, और तमाम ताबिंदा पेशानी वालों के इमाम और सारे मोमिनों के सरदार अली होंगे।

अला बिन मुसय्यब, अबी दाउद और बुरीदा इस्लमी से रिवायत है वो कहते हैं रसूल अल्लाह स0 ने हम लोगों को हुक्म दिया कि हम हज़रत अली को अमीर–ऊल–मोमनीन कह कर सलाम करें और इस वक़्त, वहां हम सात लोग थे जिनमें सब छूटा में था। (तारीख़ दमिश्क़, इब्ने असाकिर, दारूल फ़िक्र, बेरूत, तबा आम1415हि, जि42, पे303 लेसानुलमीज़ान, इब्ने हिज्र, मोअस्सासातुला आलमी, बेरूत, अलतबा तुस्सानी1390 हि 1971ई, जि1, पे107)

और बिहारूल अनवार में रिवायत इससे भी ज़्यादा तफ़सीली है, चुनांचे अनस कहते हैं रसूल अल्लाह ने फ़रमाया; ऐ अनस मेरे लिए वुज़ू का पानी भर लाओ और फिर आपऐ ने दो रकात नमाज़ अदा की और फ़रमाया ऐ अनस, अभी इस दरवाज़ा से दाख़लि होने वाला पहला इन्सान अमीर–ऊल–मोमनीन, मुस्लमानों का सरदार, दरख़शां जबीनों का सरबराह और वसियों की आख़िरी कड़ी है।

अनस कहते हैं मैंने दिल में कहा ऐ अल्लाह वो कोई अंसार ही में से हो, और जब अली अलैहिस–सलाम आए तो मैंने आंहज़रत से छुपाया।

रसूल अल्लाह स0 ने जब पूछा कि कौन है तो मैंने कहा अली हैं, ये सुनकर रसूल अकरम मुस्कराते हुए खड़े हुए और उन्हें गले से लगाकर उनके चेहरे के पसीना को अपने चेहरे और अपने चेहरे के पसीना को अली के चेहरे पर लगाने लगे।

अली अलैहिस–सलाम ने कहा ऐ अल्लाह के नबी आज जो आप ने मेरे साथ किया, ऐसा आप ने कभी भी किया।

आप अ0 ने फ़रमाया मैं ऐसा क्यों ना करूँ जबकि तुम मेरे अमीन, लोगों को मेरा पैग़ाम पहुंचाने वाले और मेरे बाद उम्मत की गिरह कुशाई करने वाले हो। (बिहारूलअनवार, अल्लामा मजलसी, जि40, पे15, रक़म30)

रसूल अकरम स0 बस लक़ब से नवाज़ने की हद तक महदूद ना रहे बल्कि अपने सहाबा को हुक्म दिया कि हज़रत अली को अमीर–ऊल–मोमनीन कह कर सलाम करें। चुनांचे हुज़ैफ़ा बिन यमान के गुलाम सालिम से रिवायत है कि नबी अकरम स0 ने हम लोगों को हुक्म दिया कि हम अली इब्न अबी तालिब को "अमीर–ऊल–मोमनीन वरहमतुल लाहे बराकातहु के ख़िताब से सलाम क्या करें। (मनाक़िब अली बिन अबी तालिब, अलअसफहानी, पे55, रक़म12)

१०. सबसे पहले फ़िदाकार

हज़रत इमाम अली अलैहिस–सलाम इस्लाम के सबसे पहले फ़िदाकार हैं। नबी अकरम ने सबसे ज़्यादा महाज़ों में सफ़े अव्वल पर आप ही को रखा है, जिनमें सबसे ज़्यादा मशहूर–ओ–मारूफ़ मारका शबे हिजरत का है, जिस वक़्त मुशरेकीन मक्का आँहज़रत अ0 को जान से मारना चाहते थे और आप को जब मालूम हुआ तो आप ने हज़रत अली को अपने बिस्तर पर सोने का हुक्म दिया और हज़रत अली ने भी ज़र्रा बराबर दरेग़ ना किया और खुद को रसूल अकरम पर फ़िदा करने के लिए तैयार हो गए।

ये वाक़िया तारीख़–ओ–हदीस की मुतअद्दिद किताबों में दर्ज है। चुनांचे इब्ने हिशाम सीरत उन्नबी में लिखते हैं अबू जहल बिन हिशाम ने कुरैश से कहा कि मेरे पास मोहम्मद के (ख़त्म करने के) सिलसिला में एक राय है में पेश कर रहा हूँ, तुम सब इस पर मंजूरी दो, सबने कहा वो राय क्या है ऐ अबा हक्म!

वो कहता है मेरी राय ये है कि हम हर क़बीला से एक मज़बूत, शिनाख़्त शूदा और मारूफ़ जवान तैयार करें और फिर हर एक हाथ में तेज़ धार वाली तलवार दें और वो उन पर हमला करें और सब एक साथ वार करें। इस तरह वो उन्हें क़त्ल कर देंगे और हम उन से निजात पा लेंगे। चुनांचे अगर मुख़्तलिफ़ क़बीलों के जवानों ने मिलकर मोहम्मद को मारा तो तमाम क़बीलों के लोग उनके क़त्ल के ज़िम्मेदार होंगे और बनी अब्दे मुनाफ़ इन तमाम क़बीलों से मुक़ाबला नहीं कर पाएँगे, और नतीजे में वो हमसे खून बहा लेने पर राज़ी हो जाएंगे और हम खून बहा दे देंगे।

इब्ने हिशाम कहते हैं कि एक नज्दी सन रसीदा शख़्स ने कहा कि इस आदमी की राय बिलकुल सही है और इस से बेहतर कोई राय नहीं हो सकती। चुनांचे लोग इस फ़ैसला के बाद वहां से चले गए।

वो कहते हैं इस के बाद जनाब जिब्राईल रसूल अकरम स0 के पास तशरीफ़ लाए और कहा जिस बिस्तर पर आप हर–रोज़ रात में आराम करते हैं, आज उस पर न सोइए।

इब्ने हिशाम कहते हैं जब रात का अंधेरा छाया तो क़ुरैश रसूल अकरम स0 के दरवाज़े के पास जमा हो कर इस इंतिज़ार में थे कि कब वो अपने बिस्तर पर जाएं और ये लोग उन पर हमला–आवर हो जाएं। रसूल अकरम स0 ने उन्हें देखकर हज़रत अली बिन अबी तालिब अलैहिस–सलाम से कहा मेरे बिस्तर पर सो जाएं, और मेरी ये सबज़ हज़रमी चादर ओढ़ लें, कोई भी नागवार हादिसा उनकी तरफ़ से आप से नज़दीक नहीं होगा। और ये वो चादर थी जिसे रसूल–ए–ख़ूदा स0 ओढ़ कर सोया करते थे।

इब्ने इसहाक़ कहते हैं यज़ीद बिन ज़ियाद ने मुझसे मोहम्मद बिन क़ाब की रिवायत बयान की है; वो कहते हैं जब क़ुरैश जमा हुए उनमें अबू जहल बिन हिशाम भी था। अबू जहल ने रसूल अल्लाह स0 के दरवाज़ा पर उन लोगों से कहा; मोहम्मद का ये ख़्याल है कि अगर तुम सब उनकी पैरवी करो तो अरब–ओ–अजम की बादशाही तुम्हारे पास होगी और मरने के बाद दुबारा मबऊस किए जाओगे और उरदन के बाग़ात की तरह तुम्हारे भी बाग़ात होंगे और अगर तुमने ऐसा नहीं कहा तो तुम मारे जाओगे और फिर मौत के बाद दुबारा मबऊस किए जाओगे और जहन्नुम की आग में डाल दिए जाओगे और वहां जलो भुनोंगे।

इब्ने इसहाक़ कहते हैं रसूल अल्लाह स0 उनके सामने से निकले और आप की मुट्ठी में मिट्टी का ढेर था, आप अ0 ने फ़रमायाः "हाँ मैं ये कहता हूँ और तू उनमें से एक होगा। और अल्लाह ने उनकी आँखों पर ऐसे पर्दे डाले कि वो आंहज़रत स0 को देख ही नहीं पाए और आप उनके सामने से उनके सरों पर ख़ाक डालते हुए सूराए यासीन की ये आयात पढ़ते हुए निकल गएः

يس *وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ *إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ *عَلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ *تَنزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ }(سورةيس: الآيات: 1-5) إلى قوله: {وَجَعَلْنَا مِن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدّاً وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدّاً فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لاَ يُبْصِرُونَ "(سورةيس، الآية:٩)

उनमें कोई ऐसा ना था कि जिसके सर पर आप अ0 ने ख़ाक ना डाली हो, और फिर अपनी मंज़िल की तरफ़ निकल पड़े।

इसी अस्ना में एक शख़्स दरवाज़े पर जमा लोगों से आकर पूछता है कि यहां किस का इंतिज़ार कर रहे हो

सभी ने जवाब दिया हम मोहम्मद का इंतिज़ार कर रहे हैं।

वो शख़्स कहता है क़सम बखुदा मोहम्मद तुम्हारे ख़्वाबों पर पानी फेर गए और तुम में से हर एक के सिर पर ख़ाक डाल कर चले गए हैं। देखो तुम सब किस ग़फ़लत में हो।

इब्ने इसहाक़ कहते हैं फिर एक एक ने अपने सिर पर हाथ फेरा तो सिर पर ख़ाक पाई और जब घर के अंदर पहुंचे तो बिस्तर पर हज़रत अली अलैहिस–सलाम को रसूल अल्लाह स0 की चादर ओढ़ कर सोता देखकर, कहा खुदा की क़सम ये मोहम्मद ही हैं जो अपनी चादर ओढ़ कर सो रहे हैं और इस तरह उन्होंने पूरी रात पहरा दिया। सुबह के वक़्त जब बिस्तर से हज़रत अली उठे तो ताज्जुब से कहा खुदा की क़सम वो शख़्स, ठीक कह रहा था

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि इस रात कुरैश के मकर–ओ–फ़रेब को ज़ाहिर करते हुए अल्लाह ने ये आयात नाज़िल फ़रमाई;وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ

(सूरह इनफाल, आयत 30)

और इरशाद फ़रमाया " أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ * قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ

(सूरह तूर, अयत 30–31)

इब्ने इसहाक़ कहते हैं और इसके बाद अल्लाह ने अपने नबी अ0 को हिजरत की इजाज़त दी। (अलसीरतुन नबवीया, इब्ने हिशाम, जि2, पे 108–110, व

तारीख़े तबरी, जि2, पे99, वलबदाया वालनेहाया, इब्ने कसीर, जि3, पे216, व अैवनुल असर, इब्ने सैय्यदुननास, मोअस्सासाते इज़्ज़उद्दीन, बैरूत, तबा आम1409 हि0, 1986ई0, जि1, पे234 व सबीलुल हुदा, वालरिशाद, अलसालेही अलशामी, जि3, पे232)

ईसार–ओ–फ़िदाकारी और रसूल अल्लाह स0 पर जानेसारी की दूसरी नुमायां मिसाल शेबे अबी तालिब अ0 है। जब कुरैश ने बनी अब्दुल मुत्तालिब का समाजी बाईकॉट किया और मुस्लमान शेबे अबी तालिब में रहने लगे तो हर–रोज़ रात को हज़रत अली अपने वालिद के कहने पर रसूल अल्लाह के बिस्तर पर सोते थे।

ईसार–ओ–फ़िदाकारी और रसूल अल्लाह स0 पर जांनेसारी की एक और मिसाल रसूल अकरम स0 और दीन इस्लाम का दिफ़ा–ओ–हिफ़ाज़त है। लिहाज़ा हज़रत अली अलैहिस–सलाम ही इस्लाम में पहले फ़िदाकार–ओ–जानिसार हैं।

११. राह–ए–ख़ुदा में सबसे पहले मुजाहिद

असहाबे पैग़ंबरे अकरम स0 के दरमियान राह–ए–ख़ुदा में जिहाद–ओ–फ़िदाकारी करने में सबसे ज़्यादा नुमायां शख़्स हज़रत अली, असदुल्लाह हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तालिब, जाफ़र बिन अबी तालिब, उबैदा बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तालिब, ज़ुबैर बिन अवाम वग़ैरह थे।

लेकिन उनमें सबसे नुमायां और सरे फ़ेहरिस्त काशिफ़ कर्ब पैग़म्बर स0, तमाम जंगों में पेश पेश रहने वाले, हर मैदान में ताईदे ख़ुदा के हामिल, किसी भी मारके से फ़रार ना करने वाले और एक ही ज़रबत में दुश्मन का क़िला क़मा करने वाले हज़रत इमाम अली अलैहिस–सलाम हैं जिनको दुश्मन पर दूसरे वार की ज़रूरत ही पेश नहीं आती थी।

आपकी शुजाअत तो ऐसी थी कि जिसे देखकर लोग तमाम सूरमाओं को भूल गए और ना ही आपके बाद अब किसी जंगजू को याद रखेंगे। मैदान–ए–जंग में आपकी बहादुरी इस क़दर मशहूर है कि क़ियामत तक उस की मिसालें दी जाएँगी। आप वो बहादुर हैं जिसने कभी भी मैदान से फ़रार नहीं किया और ना ही किसी से धौंस खाई, और जब भी कोई दुश्मन सामने आया उसे ज़ेर किया और कभी भी पहली ज़रबत के बाद दूसरी की ज़रूरत नहीं पड़ी, जैसा कि हदीस में आया है कि "उनकी ज़रबतें एक ही हुआ करती थीं (बिहारूल अनवार, अल्लामा मजलिसी, जि41, पे143)

तमाम इतिहासकारों का इत्तिफ़ाक़ है कि मारकाए बद्र के सबसे अव्वल दर्जा के मुजाहिद हज़रत इमाम अली हैं, जिन्हों ने वलीद बिन अतबा और बद्र में मारे जाने वाले आधे मुशरेकीन को ख़ुद तहे तेग़ किया था।

इब्ने अबी अलहदीद कहते हैं राहे ख़ुदा में अली का जिहाद दोस्त–ओ–दुश्मन, सब ही पर अयाँ है, वो मुजाहिदों के सरदार हैं और उनके सिवा किसी ने भी जिहाद का हक़ अदा नहीं किया। और मेरी नज़र में रसूल अल्लाह स0 की जगों में सबसे अज़ीम और मुशरिकीन पर सबसे सख़्त गुज़रने वाला मार्का जंग बद्र का था, जिसमें 70 मुशरिकीन फ़िन्नर हुए थे और उनमें आधे दुश्मनों का काम

हज़रत अली अ0 ने ही तमाम किया था और बक़ीया नसफ़ को मुस्लमानों और फ़रिश्तों ने क़तल किया था। इस सिलसिला में मोहम्मद बिन उम्र वाक़दी की किताब मुग़ाजी और यहिया बिन जाबिर बलाज़री की तारीख़ अशराफ़–ओ–दीगर कुतुब के मुतालेए से भी इस बात की ताईद होती है। और यहां बद्र के अलावा ओहद, ख़ंदक़ वग़ैरा में आप ने जिनको वासिल जहन्नुम किया उनका तो शुमार ही नहीं है। और इस हक़ीक़त पर इस से ज़्यादा और कुछ लिखना ज़रूरी भी नहीं है क्योंकि उस की सच्चाई की मिसाल ऐसी ही है जैसे शहर मक्का–ओ–मिस्र वग़ैरह के वजूद का । जिस तरह कोई उनका इनकार नहीं कर सकता, इसी तरह इस हक़ीक़त का भी इनकार नामुमकिन है। (शरह नजुलबलागह़, जि1, पे41)

१२. इस्लाम के सबसे पहले क़ाज़ी

रसूल अल्लाह स0 ने तीन क़ाज़ी मुक़र्रर किए और कभी भी उनके अलावा किसी और को क़ाज़ी नहीं बनाया। इन तीनों में सब पहले क़ाज़ी हज़रत इमाम अली अलैहिस–सलाम हैं। इमाम अली इस सिलसिला में फ़रमाते हैं रसूल अल्लाह स0 ने मुझे जब क़ाज़ी बनाया तो मैंने कहा ऐ अल्लाह के नबी आप मुझे ऐसे लोगों के दरमियान भेज रहे हैं जो मुझसे उम्र में बड़े हैं और मैं कम उम्र हूँ, मुझे क़ज़ावत भी नहीं आती (इमाम को खुदावंदे आलम तमाम उलूम अता करता है और वो –ए–लदुन्नी की बुनियाद पर तमाम चीज़ों से आगाह–ओ–आश्ना होता है। यहां इस ताबीर का मफ़हूम ये होगा कि गोया इमाम अली अलैहिस–सलाम फ़रमाना चाहते हैं कि मैंने तमाम उलूम की तरह फ़ने क़ज़ावत भी अपने उस्ताद रसूल–ए–खूदा से हासिल किया है। ऐसी ताबीरें इस किताब में जहां भी आएं, उस का ये मफ़हूम होगा। और एक इमाम अपने से पहले वाले इमाम या रसूल अकरम स0 और या फिर खुदा के सामने अपने आपको कम ज़ाहिर कर सकता है।)

रसूल अल्लाह स0 ने मेरे सीने पर अपना हाथ फेरा और फ़रमाया अल्लाह तुम्हें साबित–क़दम रखे और तुम्हारा मददगार हो और जब कभी भी तुम्हारे पास दो लोग अपना मुद्दा लेकर आएं तो जब तक तुम दूसरे फ़रीक़ का मुद्दा ना सुन लेना, उस वक़्त तक फ़ैसला ना करना, हक़ीक़त का सही फ़ैसला करने के लिए ये तुम पर ज़रूरी है।

इमाम अली अ0 फ़रमाते हैं इस के बाद मैं हमेशा क़ाज़ी रहा। (ग़ायतुल–मराम, अलसैय्यद हाशिम अलबहरैनी, जि5, पे252)

कंज़ुल आमाल में हज़रत अली से रिवायत है, आप फ़रमाते हैं रसूल अल्लाह स0 ने मुझे यमन भेजा ताकि मैं उनके दरमियान फैसला करूँ, मैंने आंनहज़रत स0 से अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! आप मुझे क़ज़ावत के लिए भेज रहे हैं, जबकि मैं जवान हूँ और मुझे क़ज़ावत से भी साबिक़ा नहीं। रसूल अल्लाह स0 ने मेरे सीने पर अपना हाथ फेरा और फ़रमाया बारे इलाहा इसके क़लब को हिदायत

और इसकी ज़बान को हक़गोई अता कर। इस के बाद से आज तक क़ज़ावत में मुझे कभी शुबह नहीं हुआ। (कंज़ुल आमाल, जि13, पे120, रक़म36386)

उमरू बिन मर्राह से रिवायत है कि अबू बख़्तरी कहते हैं एक शख़्स ने खुद हज़रत अली अ0 से सुना है वो बयान करता है कि हज़रत अली फ़रमा रहे थे जब अल्लाह के नबी ने मुझे यमन का क़ाज़ी बनाया तो मैंने कहा; ऐ अल्लाह के नबी आप ने मुझे ये ओहदा दिया है जबकि मैं अभी कमसिन हूँ और क़ज़ावत्त से भी आश्ना नहीं

आप फ़रमाते हैं कि फिर आनहज़रतऐ ने मेरे सेना पर हाथ फेरा फ़रमायाःअलिफ बे–शक अल्लाह तुम्हारी ज़बान को हक़गोई और क़लब को हिदायत अता करेगा और इसके बाद फिर क़ज़ावत में मुझे कभी आजिज़ी का सामना नहीं करना पड़ा। (मनाक़िब अली बिन अबी तालिब, अलइसफ़हानी, पे90–91, रक़म88)

१३. इस्लाम के पहले पर्चमदार

इतिहासकारों ने नक़ल किया है कि हज़रत अली इस्लाम के वो पहले अलमबरदार हैं, जिन्हों ने तमाम जंगों और तमाम मुक़ामात पर पर्चम इस्लाम को सँभाला है, सिवाए जंग तबूक के, क्योंकि इस जंग में रसूल अल्लाह स0 उन्हें मदीना में अपना ख़लीफ़ा बना कर गए थे।

शेख़ मुफ़ीद रह0 फ़रमाते हैं क़ुरैश का सबसे पहले कुसा बिन किलाब के हाथों में था और उनके बाद अब्दुल मुत्तालिब के बेटों के हाथों में पहुंचा, जो भी जंग में हाज़िर होता था उसे अपने हाथों पर बुलंद करता था, यहां तक कि अल्लाह के नबी की बेअसत हुई उसके बाद क़ुरैश और दीगर तमाम क़बीलों के पर्चम नबी अकरम स0 के हाथों में आ गए, और आंहज़रत स0 ने उन्हें क़ुरैश में बाक़ी रखा। और ये पर्चम अल्लाह ने ग़ज़वाए विदाँन (ग़ज़वा अबवा भी कहा जाता है उसे। ये जंग मुक़ाम अबवा में होने वाली थी और जंग बद्र से भी पहले थी, लेकिन नहीं हुई और क़बीला बनू ज़मुरा से वहां सुलह हुई और विदाँने अबवा से 6 मील के फ़ासिले पर था। इसलिए इस ग़ज़वा का नाम विदाँ हो गया। मैं हज़रत अली बिन अबी तालिब को अता फ़रमाया। ये वो पहली जंग है जिसमें पहली बार नबी अकरम स0 के साथ इस्लाम का परचम लहराया और इसके बाद हर मुक़ाम पर वो आप के साथ रहा। बद्र के अज़ीम मारके में, फिर ओहद में और इस वक़्त पर्चम बनी अब्दुलदार के हाथों में था, रसूल अल्लाह स0 ने उसे मुसअब बिन अमीर के हाथ में दिया, मुसअब बिन अमीर शहीद हो गए और परचम उनके हाथ से गिर गया और मुख़्तलिफ़ क़बीले के लोगों ने उसे हासिल करने की तमन्ना की लेकिन रसूल अल्लाह स0 ने परचम हज़रत अली अलैहिस–सलाम के हाथों में दे दिया और इस दिन से आज तक परचमे इस्लाम और निशान बनी हाशिम के हाथों में है। (अल–इरशाद, अल–शेख़ अलमुफ़ीद, पे42)

मुफ़ज़्ज़ल बिन अब्दुल्लाह ने सिमाक से और उन्होंने अकरमा से और उन्होंने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि हज़रत अली अ0 में चार ख़सलतें ऐसी हैं जो किसी में भी नहीं हैं अरब–ओ–अजम में वो पहले शख़्स हैं जिसने नबी अकरम

स0 के पीछे सबसे पहले नमाज़ अदा की, तमाम जंगों में इस्लाम के अलमबरदार रहे हैं, वो अली हैं जो यौमे मोहरास यानी जंगे ओहद में तन्हा अल्लाह के नबी के साथ रहे जब कि तमाम साथी फ़रार कर चुके थे और वो अली हैं जिन्होंने नबी अकरम स0 को सुपुर्दे ख़ाक किया है। (अलइरशाद, शेख़ अलमुफ़ीद, पे42)

क़तादा से रिवायत है कि हज़रत अली जंगे बद्र और दीगर तमाम जंगों में रसूल अकरम के पर्चमदार थे। (अलतबाक़ातुल कुबरा, इब्ने साअद, दारे सादिर, बैरूत, जि3, पे23)

सैय्यद जाफ़र मुर्तज़ा आमली ने चंद ऐसे दलायल पेश किए हैं जिनसे साबित होता है कि तमाम जंगों और ग़ज़वात में हज़रत अली ही पर्चमदार इस्लाम रहे हैं। ज़ैल में बाअज़ दलायल पेश हैं

1.इब्ने अब्बास कहते हैं कि जंगे बद्र में इस्लाम का परचम हज़रत अली के हाथों में था और हुक्म–ए–हाकिम कहते हैं कि तमाम जंगों में परचम हज़रत अली के हाथों में ही था

2.मालिक बिन दीनार कहते हैं मैंने सईद बिन जुबैर और उनके दीगर भाईयों से पूछा कि नबी अकरम स0 का परचमदार कौन था? तो सबने कहा परचमदार रसूले खुदा हज़रत अली अ0 थे।

और एक दूसरी रिवायत में है कि जब मालिक ने सईद बिन जुबैर से पूछा तो वो बहुत नाराज़ हुए, मालिक ने उनके क़ारी भाईयों से शिकायत की तो उन्हों बताया कि वो हुज्जाज से डरते हैं। मालिक ने सईद बिन जुबैर से फिर पूछा तो उन्होंने कहा कि परचम के अलमबरदार हज़रत अली ही थे, ये मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास से सुना है

नीज़ एक और दूसरी रिवायत में मालिक बन दीनार कहते हैं कि मैंने सईद बिन जुबैर से पूछा रसूल अकरम स0 का पर्चमदार कौन था

वो कहते हैं तुम बेवकूफ़ हो। {यानी ऐसा सवाल करना बेवकूफ़ी है}

फिर माबद जहनी ने मुझसे बताया सफ़र के दौरान ये परचम मयस्सरा अबसी के हाथ में रहा करता था और जंगों में हज़रत अली इब्ने अबी तालिब उसे अपने हाथ में ले लिया करते थे।

3.जनाब जाबिर से रिवायत है कि अस्हाब ने नबी अकरम स0 से पूछा, ऐ अल्लाह के नबी महशर में आप का अलमबरदार कौन होगा!

आप ने फ़रमाया महशर में भी मेरे अलमबरदार वही अली बिन अबी तालिब हैं जो दुनिया में मेरे पर्चमदार हैं

और बाअज़ रिवायतों में परचम की जगहा लफ़्ज़ निशान इस्तिमाल हुआ है।

4.साद बिन विक़ास ने रास्ता में एक शख़्स को देखा वो हज़रत अली की शान में गुस्ताख़ी कर रहा है और शहर के लोग उस के चारो तरफ जमा हैं। साद बिन वक़ास ने उस शख्स से कहा ऐ शख़्स, तो क्यों अली बिन अबी तालिब की शान में गुस्ताख आमेज़ जुमले कह रहा है? क्या अली सबसे पहले मुस्लमान नहीं हैं? क्या उन्होंने सबसे पहले रसूल अ0 के पीछे नमाज़ अदा नहीं की? क्या लोगों में सबसे ज़्यादा ज़ाहिद वो नहीं हैं? क्या लोगों में सबसे ज़्यादा रखने वाले वही नहीं हैं? क्या जंगों में रसूल अकरम स0 के पर्चमदार वो नहीं थे।

चुनांचे साद बिन विक़ास की बात से अंदाज़ा होता है कि ये तमाम सिफ़ात मौलाए कायनात के इमतियाज़ात का हिस्सा हैं।

5. मुक़स्सम से रिवायत है कि नबी अकरम स0 का परचम हज़रत अली बिन अबी तालिब अलैहिस–सलाम के हाथ में रहता था और अंसार का परचम साद बिन इबादा के हाथों में होता था और जब जंग शबाब पर होती थी तो नबी अकरम स0 अंसार के परचम तले होते थे।

6. आम सी रिवायत है कि नबी अकरम स0 का परचम हमेशा हज़रत अली बिन अबी तालिब अलैहिस–सलाम के हाथों में होता था और अंसार में कोई मुईन नहीं था।

यहां ये कोई कह सकता है कि पांचवीं और छठी दलील से ये साबित नहीं होता कि परचम लाज़िमी और वाज़ेह तौर पर सिर्फ हज़रत अली अलैहिस–सलाम के

हाथों ही में रहता था, बल्कि उनके ज़ाहिर से ये साबित होता है कि आप नबी अकरम स0 के परचमदार हैं।

7. सालबा बिन अबी मालिक से रिवायत है कि साद बिन इबादा तमाम मौक़ों पर नबी अकरम स0 के परचमदार होते थे लेकिन जंग के मौक़ा पर परचम हज़रत अली बिन अबी तालिब के हाथों में होता था।

8. इब्ने हमज़ा से रिवायत है कि क्या किसी भी साहिब–ए– ने ये बयान किया है कि अली किसी लश्कर में हों और वो उस लश्कर के सरदार ना हों? क्या हदीस मुनाशिदा (हदीस मुनाशिदा दर असल उस रिवायत को कहते हैं जिसमें मौलाए कायनात ने जनाब उसमान की ख़िलाफ़त से क़ब्ल शूरा में मौजूद लोगों से ख़िताब करते हुए इस्लाम में अपनी बरतरी साबित की थी और वहां मौजूद लोगों से अपनी बरतरी और फ़ज़ीलत का इक़रार लिया था) में हज़रत अली अ0 ने नहीं फ़रमाया था, मैं तुम लोगों को ख़ौफ़–ए–खुदा दिलाता हूँ, ये बताओ कि रसूल अकरम की बेअसत के बाद क्या मेरे इलावा तुम में से कोई था ऐसा जिसने रसूल स0 की प्रचमदारी की हो

सभी ने मिलकर कहा हरगिज़ नहीं।

(अलसही मिन सेरतुन्नबी अल आज़म (स), अल–सैयद जाफ़र मुर्तज़ा आमली, जि7, पे99–102)

इन तमाम दलायल से ये साबित होता है कि हज़रत अली अलैहिस–सलाम इस्लाम के सबसे पहले अलमबरदार और तमाम जंगों, मौक़ों और मुक़ामों पर इस्लाम के परचमदार थे।

१४. सब से पहले हाश्मी ख़ालीफ़ा

हज़रत इमाम अली अलैहिस–सलाम पहले हाश्मी ख़लीफ़ा हैं बल्कि और इनसे क़ब्ल हाश्मियों में किसी को भी ख़िलाफ़त मयस्सर नहीं हुई। वो तमाम सिफ़ात–ओ–कमालात जो क़बीलाए बनी हाशिम की शौहरत–ओ–बरतरी का सबब थे वो यकजा आप में पाई जाती थीं और आप के वालिद बुज़ुर्गवार अबू तालिब बिन अब्दुलमुत्तलब बिन हाशिम हैं जो सैय्यद बतहाह और कुरैश के सरदार हैं।

आप की वालिदा गिरामी फ़ातिमा बिंन्ते असद बिन हाशिम थीं। और आप वो मोमिना ख़ातून हैं जिनका साबक़ीन–ओ–अव्वलीन मुस्लमानों में शुमार होता है और शहज़ादी आमना बिंन्ते वहब के इंतिक़ाल के बाद आप ही ने नबी अकरम स0 को अपनी आग़ोश मुबारक में पाला था जबकि उस वक़्त नबी अकरम सिर्फ 6 बरस के थे।

और ये हाश्मी ख़िलाफ़त हज़रत अली अलैहिस–सलाम के बाद उनके फ़र्ज़द इमाम हसन मुज्तबा अलैहिस–सलाम में जलवागर हुई।

१५. इस्लाम के सबसे पहले मुसन्निफ़

इस्लाम में सबसे पहले हज़रत इमाम अली अलैहिस–सलाम ने किताब लिखी और नहजुलबलाग़ा जिसे सैय्यद शरीफ़ रज़ी ने जमा किया, इस किताब में हज़रत अली अलैहिस–सलाम के खुतबात, खुतूत, नसीहतें और हिकमतें हैं और नहजुलबलाग़ा हज़रत अली अलैहिस–सलाम की तरफ़ मंसूब किताबों में सबसे मशहूर और नुमायां किताब है।

तारीख़ में किताब अलफ़रायज़ के नाम से भी एक किताब है। ये किताब भी इमाम अली अलैहिस–सलाम की तसनीफ़ है और उसे फ़राइज़ इमाम अली भी कहा जाता है और ये किताब मासूमीन अलैहिमुस्सलाम के पास थी और उनके मोतबर अस्हाब और शागिर्दों ने इस किताब से रिवायात भी नक़ल की हैं।

आप की तसनीफ़ात में सबसे नुमायां वो ख़त है जो आप ने मिस्र में अपने गवर्नर जनाब मालिक अश्तर को लिखा था और एक हुकूमत की देख रेख और उसके निज़ाम की तदबीर के हवाले से ये ख़त एक अहम मंशूर माना जाता है।

अली बिन राज़े ने फ़िक़्ह में एक किताब को आप से मंसूब किया है जिसमें आप ने फ़िक़्ह के अबवाब बयान किए हैं। निसाई ने मस्नद इमाम अली के नाम से एक किताब तालीफ़ की है जिसमें आप के अक़्वाल–ओ–रवायात नक़ल हुए हैं। उनके अलावा तारीख़ में और भी मुंसिफ़ात हैं, जिन्हें इमाम अली की तहरीर कहा है।

१६. नहव के बानी

इतिहासकारों के दरमियान इस बात का शोहरत है कि सबसे पहले` नहव, उस के उसूल–ओ–क़वाइद और अदबी फ़ुरुआत और उनके हदूद की बुनियाद हज़रत इमाम अली अलैहिस–सलाम ने डाली है और अबुल असवद दोली (ज़ालिम बिन अमरू) ने इमाम से सीखने के बाद उसे मज़ीद सैक़ल किया नीज़ उस के फ़रुआत में इज़ाफ़ा किया और उसे एक नहज दिया जिसके बाद उस का नाम नहव हुआ।

सैय्यद मोहसिन अमीन र0 कहते हैं:

रावियों और दानिशवरों का इत्तिफ़ाक़ है कि सबसे पहले ` नहव के उसूल–ओ–क़वाइद हज़रत अमीर–ऊल–मोमनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस–सलाम ने ईजाद किए हैं। आप ने ये क़वाइद अबूल असवद दोली ज़ालिम बिन अमरो को सिखाए। वो ताबई थे और मौलाए कायनात की हिदायात के मुताबिक़ उन्होंने` नहव की शिख़े ईजाद कीं। अयानुशिया, सैयद मोहसिन अलअमीन, जि1, पे230)

वो मज़ीद कहते हैं हक़ ये है कि` नहव की सबसे पहले हज़रत अली ने बुनियाद डाली है क्योंकि इस की ईजाद से मुताल्लिक़ तमाम रिवायात का सिलसिला अबुल असवद पर ख़त्म होता है और अबूल असवद ने हज़रत अली अ0 से ही हासिल किया है। रिवायत है कि अबुल असवद से पूछा गया कि आपने` नहव कहाँ से सीखा? उन्होंने जवाब दिया मैंने इस के बुनियादी उसूल हज़रत अली अ0 से सीखे हैं। अबुल असवद दोली से अंबसतल फ़ील, मैमून अक़रन, नस्र बिन आसिम, अबदुर्रहमान बिन हुर्मुज़ और यहिया बिन यामर ने हासिल किया है

इब्ने नदीम कहते हैं बाअज़ अह्ले का कहना है कि नस्र बिन आसिम ने अबुल असवद से` नहव सीखा है और याकूत से किताब बग़ीयतुल वाअता में नक़ल हुआ है कि नस्र ने कुरआन और नहव अबुल असवद से हासिल किया है।

सैबूया के खुतबे की शरह में अबूल अंबारी कहते हैं कि आयत :

أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ (सूर तौबा, आयत 3) में कलिमा "रसूला को जब किसी ने रसूल अल्लाह के दौर में ही कसरा के साथ पढ़ा तो आंहज़रत स0 ने हज़रत अली को` नहव के उसूल–ओ–क़वाइद की तासीस की हिदायत दी। चुनांचे हज़रत अली ने अबुल असवद को` नहव के उसूल–ओ–क़वाइद, एराब–ओ–बिना के ज़वाबित की तालीम दी और इस तरह` नहव की तासीस हुई। और जब कभी भी अबुल असवद को इस से मुताल्लिक़ कोई दुशवारी होती थी तो हज़रत अमीर अलमोमनेन् की ख़िदमत में हाज़िर होते थे। और अबुल असवद ने जब` नहव के मोलिफ़ा उसूल–ओ–क़वाइद अमीरूल मोमेनीन की ख़िदमत में पेश किए तो आप ने तारीफ़ व तहसीन करते हुए फ़रमायाः बेहतरीन नहव–ओ–नहज है। चुनांचे इमाम अली अ0 के इस लफ़्ज़ से इस्तिफ़ादा करते हुए उसी लफ़्ज़ को इस का नाम दे दिया गया। ये हिकायत ख़बर वाहिद है और उसकी सेहत भी मशकूक है क्योंकि रसूल अकरम स0 के दौर में अरबी ज़बान ख़ताओं से महफ़ूज़ थी। अरबी ज़बान में गलतीयां और ख़ताएँ ग़ैर अरबों के अरब मुआशेरे में दाख़लि होने के बाद शुरू हुई हैं। (अयानुशिया, अल–सैयद मोहसिन अमीन, जि1, पे233)

अल्लामा कफ़्ती अपनी किताब इंबाहुर रवाता अन्बाउन नंजात में कहते हैं तमाम अहले मिस्र का इत्तिफ़ाक़ है कि सबसे पहले नहव की ईजाद हज़रत अली करमाल्लाहु वजहु ने की है और उनसे अबुल असवद दोली ने सीखा और अबुल असवद से नस्र बिन आसिम बस्री ने और उनसे अबूल अमरो बिन अल बस्री ने और उनसे ख़लील बिन अहमद ने और उनसे सैबूयाह अबू बशर अमरो बिन उसमान बिन क़ंबर ने और उनसे अबुल हसन सईद बिन मसाद अख़्फ़श औसत ने और उनसे उसमान बिकर बिन मोहम्मद माज़नी शीबानी और इन दोनों से अबू अब्बास मोहम्मद बिन यज़ीद मुबर्रिद ने और उनसे अबू इसहाक़ जुजाज–ओ–अबूबकर बिन सिराज ने और इब्ने सिराज से अबू अली हसन बिन अबद उल–ग़फ़्फ़ार फ़ारसी ने और उनसे अबुल हसन अली बिन एसी रबीअई ने और उनसे अबू नस्र क़ासिम बिन मुबाशिर वास्ती ने और उनसे ताहिर बिन अहमद बिन शाज़ मिस्री ने और उनसे अबू जाफ़र नहास अहमद बिन इस्माईल मिस्री ने और उनसे अबूबकर अदफ़वी ने और उनसे अबू हसन अली बिन

इब्राहीम हूफ़ी ने और उनसे ताहिर बिन अहमद बिन बाबशाज़ नहवी ने और उनसे अबू अबद अल्लाह मोहम्मद बिन बरकात नहवी मिस्री ने और उनसे और दीगर नहवियों से मोहम्मद बिन बरी ने और उनसे मिस्र–ओ–मग़रिब वग़ैरा के कुछ उल्मा ने इस को हासिल किया। और इस को मज़ीद रौनक दी है, जामिआ अमरो बिन आस के फ़ाज़िल शेख़ अबू हुसैन नहवी ने जिन्हें खुर–ए–अलफ़ील कहा जाता था और उनका इंतिक़ाल सन ६२० हिज्री में हुआ है। (शरह एहक़ाकुल हक़, अलसैयद मरशी अलनजफ़ी, जि8, पे10)

इब्ने अबी अलहदीद मोतज़िली नहव की तशकील में इमाम अली अ0 के किरदार को बयान करते हुए कहते हैं और उलूम में` नहव और अरबी अदब हैं। ये तमाम लोगों पर अयाँ है कि नहव के मूजिद–ओ–मुबदे इमाम अली ही हैं और आप ने उसे अबुल असवद दोली को इस के उसूल–ओ–क़वाइद की तालीम दी। उनमें से एक बुनियादी चीज़ बताई कि हर कलाम तीन बुनियादी हिस्सों पर मुश्तमिल होता है।

इस्म–ओ–फ़ेअल–ओ–हर्फ़ और फिर कलिमा को मारिफ़ा–ओ–नक्रा में तक़सीम किया और फिर एराब की मुख़्तलिफ़ सूरतों की तालीम दी यहां तक कि ये सिलसिला रफ़ा–ओ–नसब जर–ओ–जज़्म तक पहुंचा। और फ़न की ये गहराई कोई मोजिज़े से कम नहीं है क्योंकि आम तौर से फ़िक्र बशर की इन हदों तक रसाई नहीं होती और ना इस हद तक इस्तिंबात–ओ–इकतिशाफ़ की उनमें सलाहीयत होती है। (शरह नहजूल बलाग़, इब्ने अबील हदीद,जि1,पे38)

मौला अली ने क्यों नहव को ईजाद किया? अबुल असवद दोली उस की वज़ाहत करते हुए कहते हैं मैं अमीर–ऊल–मोमनीन अ0 की ख़िदमत में दाख़लि हुआ तो मैंने देखा कि आप सर झुकाए गहरी फ़िक्र में ग़र्क़ हैं, मैंने पूछा मौला आप किस फ़िक्र में ग़र्क़ हैं।

आप ने फ़रमाया तुम्हारे शहर में लोग अब अरबी में गलतीयां कर रहे हैं, उनकी इस्लाह के लिए मैंने अरबी अदब के उसूल बनाए हैं। मैंने अर्ज़ की मौला, आपके इस अमल से अरबी ज़बान को ज़िंदगी मिल जाएगी। कुछ दिनों के बाद जब मैं

दुबारा उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने मेरे सामने एक सहीफ़ा रखा, जिसकी इब्तिदा में लिखा था

बिसमिल्लाह हिर्रमानिरहीम हर कलाम इस्म–ए–फ़अल और हर्फ़ से मिलकर बनता है और इस्म वो होता है जो किसी शख़्स की निशानदेही करे और फ़ेअल उस शख़्स के अमल की निशानदेही करता है और हर्फ़ एक ऐसे मअनी को पेश करता है जो ना इस्म है और ना फ़ेअल। फिर आप ने फ़रमाया; इसे समझो और फिर जो भी इस में इज़ाफ़ा हो सकता है तुम ख़ुद करो।

और याद रखना दुनिया की तमाम चीज़ें तीन हालतों में से एक में होती हैं ज़ाहिर या मुज़म्मिर और या ना ज़ाहिर और ना ही मुज़म्मिर। और उल्मा का इख़्तिलाफ़ उस चीज़ के मुताल्लिक़ था जो ना ज़ाहिर है और ना मुज़म्मिर। लिहाज़ा मैंने तमाम अश्या को जमा किया और इस तीसरी किस्म के ऐतबार से उनकी वज़ाहत की है। और हुरूफ़ नसब इसी तीसरी क़सम में से थे तो मैंने "उन व इन लैताक लाल और काना, को शुमार किया और उनको मैंने ज़िक्र नहीं किया था, तो आप ने फ़रमाया लेकिन को तुमने क्यों तर्क किया? मैंने कहा मैंने उसे उनमें शामिल नहीं समझा है, आप ने फ़रमाया वो भी उन्हें नवासिब में से है, इस का भी इज़ाफ़ा करो। (शरह एहक़ाकुल–हक़, अलसैयद मरशी अलनजफ़ी, जि8, पे11)

अबूल बरकान अंबारी ने "नज़ह तुल औलिया में ज़िक्र किया है कि अबुल असवद दोली कहते हैं

मैं अमीरूल मोमेनीन की ख़िदमत में हाज़िर हुवा मैं ने उनके दस्ते मुबारक में एक रुक़ा देखा, मैंने सवाल किया ये क्या है ऐ अमीर–ऊल–मोमनीन

आप ने फ़रमाया मैंने लोगों के बोल चाल पर ग़ौर किया तो मुझे एहसास हुआ कि अजमियों के हमराह होने के सबब उनकी ज़बान ख़राब होती जा रही है। लिहाज़ा मैंने ऐसे उसूल ईजाद किए हैं जिसकी तरफ़ लोग रुजू कर सकते हैं। फिर आप ने वो रुक़ा मेरे हवाले किया, जिस पर लिखा था कलाम कुल तीन चीज़ों पर मुश्तमिल होता है; इस्म–ओ–फ़ेअल व हरफ़। और इस्म वो है जो

किसी के नाम की तरफ़ इशारा करे और फ़ेअल अमल की तरफ़ इशारा करता है और हर्फ़ वो है जो दो कलिमों के बीच मफ़हूम ईजाद करता है।

फिर आप ने फ़रमाया इसी नहव–ओ–नहज पर चलो और उसूल–ओ–क़वानीन का इज़ाफ़ा करो। और ऐ अबुल असवद याद रखना इस्म तीन तरह का होता है; ज़ाहिर मुज़म्मिर और वो जो ना ज़ाहिर हो और ना ही ज़मीर। लोगों में इख़तिलाफ़ इसी तीसरी क़िस्म में होता है। इस तीसरी क़िस्म से आप की मुराद मुबहम और ग़ैर सरीह इस्म था।

अबुल असवद कहते हैं फिर मैंने अतफ़–ओ–नाअत {सिफ़त}, ताज्जुब–ओ–इस्तिफ़हाम के अबवाब की वज़ाहत की यहां तक "लकिन के अलावा " इन और दीगर तमाम हुरूफ़ मशबेहा बिल फ़ेल की वज़ाहत की। जब मैंने उन क़वाइद को इमाम अली की ख़िदमत में पेश किया तो आप ने "लकिन का भी इज़ाफ़ा करने की हिदायत दी। और मैं जब भी नहव का कोई नया बाब लिखता था तो उसे इमाम की ख़िदमत में पेश करता था ताकि कोई नुक़्स ना रहे। चुनांचे तमाम उसूलो क़वाइद को देखने के बाद मौला ने फ़रमाया बेहतरीन नहव–ओ–नहज है। इसी के बाद से इसका नाम " नहव वाक़्य हुआ। (शरह एहक़ाकुल–हक़, अलसैयद मरशी अलनजफ़ी, जि8, पे11)

हज़रत अमीर–ऊल–मोमेनीन इमाम अली इब्ने अबी तालिब नहव के बानी–ओ–मोसिस हैं, इस सिलसिला में बेशुमार दलायल हैं और मज़कूरा दलायल भी काफ़ी हैं क्योंकि ये बाब शिया और सुन्नी तमाम उलेमा–ओ–दानिशवरों के दरमियान मुसल्लम और यक़ीनी है।

१७. इल्मे कलाम के बानी–ओ–मोअस्सिस

इल्मे कलाम कलाम वह इल्म है जिसमें इस्लामी अक़ाइद को यक़ीनी दलायल के ज़रीया साबित किया जाता है

इल्मे कलाम में इस्लाम के एतिक़ादी मसाइल पर दलीलें पेश की जाती हैं और उन्हें साबित किया जाता है और उनके मुख़ालिफ़ नज़रियात पर तबसरा–ओ–बहस होती है और मुख़ालिफ़ दलीलों के ज़ोफ़ और उनके बातिल होने पर दलीलें पेश की जाती हैं, नीज़ इस्लामी अक़ाइद पर होने वाले ऐतराज़ात–ओ–शुबहात का दलीलों और बुरहान के साथ जवाब दिया जाता है। (खुलासता इल्मे कलाम, अब्दुल हादी अलफ़ज़ली, मोअस्सासे दायरे मआरिफ़ अलफ़िक़हे ईस्लामी, क़ुम, अलतबा अलसालिसा 1428हि0 2007ई0, पे33–34)

कहा जाता है कि सबसे पहले इल्मे कलाम के उसूलो क़वाइद की बुनियाद इमाम अली ने डाली है। चुनांचे तौहीद, नबुव्वत, इमामत, अदल और क़ियामत के सिलसिला में आप के बेशुमार ख़ुत्बे हैं जो नहजुल बलाग़ा और दीगर हदीस की किताबों में मौजूद हैं।

सैय्यद मुर्तज़ा र0 इस सिलसिला में फ़रमाते हैं

उसूले तौहीद और अदले इलाही का मंशा–ओ–मंबा इमाम अली अलैहिस–सलाम का कलाम और आप के ख़ुत्बे हैं। आप के ख़ुत्बे तौहीद–ओ–अदल के आला मतालिब पर मुश्तमिल हैं कि जिनके बाद मज़ीद की ज़रूरत नहीं है। चुनांचे अगर कोई इमाम अली अलैहिस–सलाम के अक़्वाल–ओ–कलिमात पर ग़ौर करे तो उसे अंदाज़ा होगा कि जितने भी उलेमा–ओ–मुतकल्लिमीन ने इस सिलसिला में किताबें तसनीफ़ की हैं वो दर असल इमाम के अक़्वाल–ओ–कलिमात की शरह और उनके ज़रीए बयान किए गए उसूलो ज़वाबित की तफ़सील ही है। (अल अमाली, अलसैयद अलमर्तज़ा, मनशुरात अलमकतबातुल असरीया, बैरूत, तबा अव्वल 1425हि, 2004ई, जि1, पे162–163)

इब्ने अबी अलहदीद कहते हैं उलूम में सबसे बरतर इलमे इलाही है, क्योकी किसी इलम की एहमीयत उसके मज़मून से मालूम होती है और इल्मे कलाम का

मज़मून–ओ–मालूम कायनात में सबसे बरतर है। लिहाज़ा ये सबसे बरतर है। और इस का इक़तिबास इमाम अली के अक़्वाल से हुआ है और उन्हीं से मनकूल है। उन्हीं से इसकी इब्तिदा है और उन्हीं पर ये ख़त्म होता है। चुनांचे मोतज़िला जो तौहीद–ओ–अदले इलाहि के क़ाइल हैं और अह्ल–ए–अक़्ल भी हैं। लोगों ने इसको मोतज़िला के उल्मा–ओ–दानिशवरों से सीखा है, क्योंकि मोतज़िला के बानी वा असल बिन अता, अबू हाशिम अब्दूल्लाह बिन मोहम्मद बिन हनफ़ीह के शागिर्द हैं और अबू हाशिम अपने वालिद के शागिर्द हैं और उनके वालिद हज़रत इमाम अली के शागिर्द हैं।

अलबत्ता अशअरी अपना अक़ीदा अबूल हसन अली बिन इस्माईल बिन अबू बशर अशअरी से निसबत देते हैं और वो अबू अली जबाई के शागिर्द हैं और अबू अली का शुमार फ़िरक़ाए मोतज़िला की मारूफ़ शख़्सियात में होता है। लिहाज़ा फ़िरक़ा अशअरी का भी सिलसिला फ़िरक़ा मोतज़िला के उसताज़ो मुअल्लिम यानी इमाम अली इब्न अबी तालिब की तरफ़ ही होता है। और इमामिया (शीया) और ज़ैदीया के सिलसिला का हज़रत अली से मुत्तसिल होना वाज़िह–ओ–नुमायां है। (शरह नहजुल बलाग़ा, इब्ने अबी हदीद, जि1, पे35–36)

चुनांचे जो कोई भी अक़ाएद से मुताल्लिक़, इमाम अली के खुतबा जात–ओ–अक़्वाल का मुतालेआ करे तो उसे ये यक़ीन हो जाएगा कि इल्मे कलाम के मोसिस–ओ–मूजिद आप ही हैं और आप से पहले कोई भी ऐसा नहीं है जिसने इस मैदान में सबक़त ली हो।

१८. आईने हुकूमत के सबसे पहले बानी

इमाम अली अलैहिस–सलाम का अपने मिस्र के गवर्नर जनाब मालिक अश्तर के नाम ख़त हुकूमती आईन का एक अहम दस्तावेज़ माना जाता है। इमाम अली ने इस ख़त में वाली–ओ–गवर्नर के फ़राइज़ जैसे अवाम से नरमी, ज़रूरतमंदों–ओ–मुहताजों की दस्त–गीरी, अवाम के साथ नेकी, अवाम से मआशी दबाव को घटाना, दीनी हदूद–ओ–फ़राइज़ का नफ़ाज़, कड़ी निगाह और ख़वास–ओ–हमनशीनों पर नज़र, लोगों के मसाइल पर बराह–ए–रास्त पहुच और बुरे हमनशीनों से गुरेज़ वग़ैरा पर मुश्तमिल फ़राइज़–ओ–हिदायात का एक मंशूर तैयार किया है।

इस के बाद इमाम अली अलैहिस–सलाम ने हुकूमती मुलाज़ेमीन की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि लायक़–ओ–बा सलाहीयत अफ़राद और अमले का इंतिख़ाब हो, उनकी मुनासिब तनख़ा हो, उनकी रफ़्तार–ओ–अमल पर नज़र हो और ख़ियानत कार–ओ–काम–चोर को मुनासिब सज़ा भी दी जाये।

और क़ज़ावत के सिलसिला में इमाम अली अलैहिस–सलाम फ़रमाते हैं कि हमेशा लायक़ और सही क़ाज़ीयों का इंतिख़ाब होना चाहीए जो क़ज़ावत और अहकाम के निफ़ाज़ में दक़ीक़ हो और क़ाज़ी लोग हर दबाव से बरी हों और महकमाए अदलिया को मुस्तक़िल होना चाहीए।

इसी तरह फ़ौजीयों और दिफ़ाई अमला से मुताल्लिक़ आप फरमाते हैं फ़ौज के सरबराहों के इंतिख़ाब में ख़ास ख़्याल रखना चाहीए और फ़ौज के सरबराहों पर हमेशा नज़र होनी चाहीए, अच्छे और होनहार सिपाहीयों की हौसला–अफ़ज़ाई करनी चाहीए और उनसे किए अह्द–ओ–वादों की वफ़ादारी होनी चाहीए और बेजा ख़ूँरेज़ी से गुरेज़ करना चाहिए

जनाब मालिके अश्तर को ख़त में इमाम अली ने समाज के मुख़्तलिफ़ तबक़ों और उनके फ़राइज़ की जानिब भी इशारा किया है और उनके वज़ाइफ़ को बयान किया है और लोगों से अच्छा बरताओ करने की हिदायत दी है। नीज़ इक़तिसाद–ओ–मईशत की तरक़्क़ी में कोशां होना, ज़मीनों को आबाद करना,

उमूमी अ–ओ–इमलाक की हिफ़ाज़त करना, मुफ़ीद और ज़रूरी इश्याय की तिजारत के लिए तजार की हौसला–अफ़ज़ाई करना, एहतिकार और स्टाकिंग को रोकना, फ़िक़रा–ए–, मसाकीन और समाज के ग़रीब–ओ–नादार तबक़ा की माली इमदाद–ओ–दस्त–गीरी को मंशूर का हिस्सा बताया है

और इस तरह इमाम अली ने एक इस्लामी हुकूमत के मुकम्मल मंशूर–ओ–आईन को तैयार किया है। यही वजह है कि इमाम अली अलैहिस–सलाम का ये ख़त मौरख़्रीन–ओ–मुहक़्क़िक़ीन के लिए हमेशा बेहस–ओ–तहक़ीक़ का मर्कज़ बना रहा है। और अब तक इस मंशूर पर मुतअद्दिद शरहें भी लिखी जा चुकी हैं, जिनमें मुआसिर हुकूमतों के दस्तूर हाए अमल से भी इस का मुवाज़ना किया गया है और मुतअद्दिद ज़बानों में इस का तर्जुमा भी हुआ है क्योंकि तारीख़ इस्लाम में अब तक इस से नुमायां और दक़ीक़ मंशूर हुकूमत किसी ने भी पेश नहीं किया है।

१९. सबसे पहले बुतशिकन

ख़ाना काअबा के अंदर रखे बुतों को सबसे पहले इमाम अली अलैहिस–सलाम ने गिराया है। हज़रत अली रसूल अकरमस0 के दोश मुबारक पर सवार हुए और आप ने ख़ाना काअबा में नसब बुतों को गिराया

हज़रत अली ने दो मर बत्ता ख़ाना काअबा के बुतों को गिराया है

पहली बार शबे हिजरत हज़रत अली नबी अकरमस0 के बिस्तर पर सोए थे और इस रिवायत को निसाई, ने ख़साइस में, अहमद बिन हनबल ने अपनी मस्नद में, हाकिम नीशापूरी ने मस्तदरक में, मुत्तक़ी हिन्दी ने कंज़ अलामाल में, ख़तीब बग़दादी ने तारीख़ बग़दाद में, अबू यअली ने अपनी मस्नद में और दीगर मौरर्ख़ीन–ओ–मुहद्दिसीन ने इस रिवायत को नक़ल किया है

वो रिवायत कुछ इस तरह हैः

इब्ने अब्बास से रिवायत है कि फ़तह मक्का के दिन जब रसूल–ए–खूदा स0 ख़ाना काअबा में दाख़लि हुए तो वहां ३६० बुत नसब थे और अरब के हर क़बीला का एक बुत था, गोया शैतान ने मज़बूती से अपने क़दम जमा रखे थे। चुनांचे रसूल अकरमस0 ने एक एक कर के अपने असा से उन बुतों को उनके मुँह के बल गिराना शुरू कर दिया और एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ बुतों को पुश्त के बल गिराना शुरू कर दिया। चुनांचे रिवायत में है कि जिस बुत को आप ने पीछे ढकेला, वो मुँह के भल गिरा और जिसे सामने ढकेला वो पुश्त के भल गिरा। आनहज़रतस0 ने बराह–ए–रास्त अपने हाथों को लगाए बग़ैर तमाम बुतों को गिरा दिया और इस आयत की तिलावत रहे" وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقاً (सूर इसरा, आयत 81)

एक रिवायत के मुताबिक़ रसूल अकरमस0 ने हज्र–ए–असवद का बोसा लेने के बाद ख़ाना काअबा का तवाफ़ किया और आपऐ के हाथ में एक कमान थी। तवाफ़ के दौरान बाब काअबा के सिम्त जब आपऐ आए तो वहां कुरैश का सबसे बड़ा हुबल" नसब था, आपऐ ने अपने हाथ में मौजूद कमान उस की आँखों में

मारना शुरू कर दी और इस आयत की तिलावत कर थे" وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقاً

"(सूर इसरा, आयत 81) यहां तक कि उसे ज़मीन पर गिरा दिया।

ज़ुबैर बिन अवाम ने अबू सुफ़ियान से कहा "हुबल गिर गया, जबकि जंग ओहद मैं तुम्हें ये गुरूर था कि इसी बुत ने तुम्हें कामयाबी दी है।

अबू सुफ़ियान ने कहा ऐ अवाम के बेटे, मुझ पर तंज़ ना कर, मैं समझ गया हूँ, अगर मोहम्मद[स0] के खुदा का कोई शरीक होता तो आज ऐसा ना होता। इतने में रसूल अकरम[स0] मुक़ाम इब्राहिम की तरफ़ बढ़े और ख़ाना काअबा के क़रीब हो कर खड़े हो गए।

रावी कहता है कि हज़रत अली करमाल्लाह वजहु से रिवायत है कि रात के वक़्त रसूल अकरम[स0] मुझे लेकर ख़ाना काबा पहुंचे और मुझे बैठने का हुक्म दिया, में बैठ गया और रसूल अकरम[स0] मेरे दोश पर सवार हुए और मुझे उठने को कहा। मेरे खड़े होने में संगीनी को देखकर रसूल अकरम [स0] ने मुझे बैठाया और मुझसे कहा कि ऐ अली, तुम मेरी दोश पर सवार हो जाओ, मैंने आप के हुक्म की तामील की और दोश पर सवार हो गया।

और एक दूसरी रिवायत में है कि रसूल अकरम [स0] ने हज़रत अली करमाल्लाहु वजहु से कहा कि ऐ अली मेरे दोश पर सवार हो जाओ और उन बुतों को तोड़ दो, मैंने कहा अल्लाह के नबी आप मेरे दोश पर सवार हो जाएं, मैं कैसे आपके दोश पर सवार होने की जुर्रत कर सकता हूँ, आनहज़रत [स0] ने फ़रमायाः ऐ अली तुम बारे नुबुव्वत को नहीं सँभाल सकते। (इस ताबीर का असल मफ़हूम गोया ये है कि नबुव्वत के फ़राइज़ के लिए अल्लाह ने मुझे चुना है और जो ज़िम्मेदारियाँ मुझे अता की हैं वो मेरे बाद मेरे जांनशीनों और इमामों को नहीं दी हैं, लिहाज़ा बहुक्म–ओ–मस्लेहते खुदा मेरे बार को कोई दूसरा नहीं सँभाल सकता। जैसा कि खुद रसूल–ए–खूदा [स0] ने एक हदीस में मौलाए कायनात से ख़िताब करके फ़रमाया था "इल्ला अन्ना ला नबी बादी, कि तुम मेरे ही जैसे हो, सिर्फ़ फ़र्क़ ये है कि मेरे बाद कोई नहीं होगा) आओ और मेरे दोश पर सवार होजाओ। चुनांचे

नबी अकरम बैठ गए और हज़रत अली करामल्लाहु वजहु उनके दोश मुबारक पर सवार हुए और आनहज़रत उन्हें अपने दोश पर सवार करके खड़े हो गए और फिर मैं ख़ाना काबा की छत पर गया और आनहज़रत किनारे हो गए और इस वक़्त मुझे ऐसा लग रहा था कि गोया मैं चाहूँ तो आसमानों की बुलंदीयों को छू लूं।

एक रिवायत के मुताबिक़ किसी ने हज़रत अली से पूछा ऐ अली उस वक़्त आप कैसा महसूस कर रहे थे, जब आप दोश नबी[स0] पर थे?

आप ने फ़रमाया मैं खुद को ऐसी बुलंदी पर महसूस कर रहा था कि गोया मैं सुरय्या को अपने हाथों से छू सकता हूँ।

और जिस वक़्त इमाम अली दोश नबी [स0] पर सवार हुए तो आनहज़रत[स0] ने फ़रमाया ऐ अली सबसे बड़े बुत को गिराओ, और वो बुत ताँबे से बना हुआ था और बाअज़ रिवायतों के मुताबिक़ शीशा से बना हुआ था।

और एक रिवायत में है कि तमाम बुतों को गिराने के बाद क़बीला ख़ज़ाआ का बुत रह गया था। इस बुत को क़बीला खुज़ाआ ने लोहे की कीलों से नसब किया हुआ था। रसूल अकरम [स0] ने मुझे कीलें निकाल कर गिराने को कहा और मैंने उस की कीलें निकाना शुरू कर दीं और नबी अकरम[स0] मुस्तक़िल इस आयत"وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقاً"(सूराए इसरा, आयत 81) की तिलावत कर रहे थे। मैं मुस्तक़िल कोशिश करता रहा और आख़िर–ए–कार कीलें निकाल दीं और बुत को गिरा दिया।

हलबी कहते हैं रिवायत के ज़ाहिर से ये लगता है कि ये बुत हुबल के अलावा कोई दूसरा बुत था और हुबल कुरैश का सबसे बड़ा बुत नहीं था बल्कि ये कोई दूसरा बुत है जो हुबल से भी बड़ा था लेकिन तारीख़ में इस का नाम दर्ज नहीं है।

अलबत्ता सबसे आख़िर में जो तोड़ा गया वो बुत हुबल ही था, ये हक़ीक़त ज़ुबैर और अबू सुफ़ियान की गुफ़्तगु से वाज़ेह होती है। जब ज़ुबैर ने अबू सुफ़ियान से कहा कि ये वही हुबल है कि जंगे ओहद में जिस पर तुम फ़ख़र–ओ–मुबाहात

कर रहे थे, तो अबू सुफ़ियान ने जुबैर से कहा कि तंज़ ना करो और मैं समझ गया हूँ कि अगर मोहम्मद[स0] के खुदा का कोई शरीक होता तो आज नक़्शा कुछ और होता।

और तफ़सीर कश्शाफ़ में नक़ल हुआ है कि हज़रत अली ने तमाम बुतों को गिरा दिया और सिर्फ काबा की छत पर क़बीलाए खुज़ाआ का बुत रह गया था, वो बुत सिफ़र के शीशे से बना हुआ था। रसूल अकरम[स0] ने कहाः ऐ अली उसे भी गिरा दो। चुनांचे रसूल अकरम[स0] ने उन्हें अपने दोश मुबारक पर बुलंद किया और ख़ानाए काबा की छत पर चढ़ कर अली अलैहिस–सलाम ने उसे भी गिरा दिया। ये देखकर मक्का वालों को बहुत हैरत हुई और कहने लगे मोहम्मद[स0] कैसे जादूगर इन्सान हैं।

ख़साइस अशरा में साहिब कश्शाफ़ ने एक दूसरी बात नक़ल की है; वो कहते हैं कि "हज़रत अली ने फ़रमाया ख़ानाए काबा की छत से उतर कर रसूल अल्लाह[स0] के साथ में जाने लगा, तो हमें ख़ौफ़ हुआ कि कहीं कुरैश हमें देख ना लें", जिससे ये अंदाज़ा होता है कि ये वाक़िया फ़तह मक्का के दिन का नहीं है। और ये काबिल–ए–ग़ौर बात है।

दूसरी बारः हज़रत अली[अ0] ने दूसरी बार ख़ानाए काबा से फ़तह मक्का के बाद गिराया है।

तफ़सीर कश्शाफ़ में ज़मख़शरी लिखते हैं कि ख़ानाए खुदा के गिर्द–ओ–पेश ३६० बुत नसब थे और हर क़बीले का एक मुस्तक़िल बुत था।

और इब्ने अब्बास से रिवायत है कि अरब के हर क़बीले का बुत होता था वो उस का तवाफ़ करते और इस के आगे सजदा करते थे। ख़ाना काबा ने अल्लाह से शिकायत की और ख़िताब किया; ऐ मेरे परवरदिगार आख़िर कब तक मेरे इर्द–गिर्द तेरे अलावा इन बुतों की इबादत होगी? अल्लाह ने ख़ानाए काबा को ख़िताब कियाः अनक़रीब में तेरी ये हालत बदल दूंगा और तेरे इर्द–गिर्द ज़मीन सज्दा करने वालों से भर दूंगा और बेमिसल बाज़ लोगों का हुजूम होगा तेरे गिर्द–ओ–पेश। और जिस तरह परिंदा शफ़क़तों से अपने अंडे को अपने वजूद

से लगाता है, लोग इसी तरह तेरे वजूद से चस्पाँ होंगे और तेरे गिर्द–ओ–पेश {तकबीर की}सदाएँ गूंजेंगे।

फिर रसूल अल्लाह[स0] ख़ाना काबा में दाख़लि हुए और जनाब बिलाल को उसमान बिन अबी तलहा के पास भेजा कि वो उससे काबे की कुंजियाँ लेकर आएं। (अलसीरतुनबवी, इब्ने हिशाम, जि3, पे123–124)

चुनांचे बेशुमार तारीख़ी अस्नाद से ये साबित होता है कि नबी अकरम[स0] ने फ़तह मक्का के दिन हज़रत अली अलैहिस–सलाम को एक अज़ीम ज़िम्मेदारी सौंपी। चुनांचे उन्हें अपने दोश मुबारक पर सवार किया और हज़रत अली ने ख़ाना काबा की छत पर जाकर इस तरह बुतों को तोड़ कर गिराना शुरू किया कि ख़ानाए काबा की दीवारें हिल रही थीं।

अहमद बिन हम्बल और अबू यअली मूसली ने अपनी मस्नद में, अबूबकर ख़तीब बग़्दादी ने अपनी तारीख़ में, मोहम्मद बिन सबाह ज़ाफ़रानी अपनी किताब फ़ज़ाइल में और ख़तीब ख़वारज़मी ने अपनी अरबईनीया में इस रिवायत को नक़ल किया है।

अबू अब्दुल्लाह ननतंज़ी ने ख़साइस में और इमाम अली रज़ा अलैहिस–सलाम के ख़ादिम अबू अलमज़ा सबीह कहते हैं कि मैं ने सुना कि इमाम रज़ा अलैहिस–सलाम अपने वालिद और वो अपने जद से आयत वराफ़ाअना मकाअंनन अली्यन (सूराए मरीयम, आयत 57) की तफ़सीर के ज़ेल में रिवायत करते हैं कि ये आयत उस वक़्त नाज़िल हुई थी जब अली अलैहिस–सलाम, नबी अकरम[स0] के दोश मुबारक पर बुतों को गिराने के लिए सवार हुए थे। (अल–मनाक़िब, इब्ने शहर आशोब, जि2, पे154)

क़तादा ने इब्ने मसीब से और उन्होंने अबू हुरैरा से रिवायत की है कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने मुझसे नक़ल किया है कि नबी अकरम[स0] के साथ हम जब मक्का में दाख़लि हुए तो उस वक़्त ख़ानाए काबा में 360 बुत नसब थे और लोग अल्लाह के सिवा उनके आगे सजदा करते थे। रसूल अकरम[स0] ने हुक्म दिया तो तमाम बुतों को मुँह के बल गिरा दिया गया। और ख़ाना काअबा की छत पर एक सबसे बड़ा बुत था जिसे लोग "हुबल कहते थे। रसूल अल्लाह [स0] ने हज़रत

अली अलैहिस–सलाम से फ़रमाया ऐ अली क्या तुम मेरे दोश पर सवार होगे उस बुत को गिराने के लिए, या मैं तुम्हारे दोश पर सवार हो कर पुश्ते बाम काबा से उसे गिराऊं!

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं: ऐ अल्लाह के नबी आप मेरी पुश्त पर सवार हों। चुनांचे जब आंहज़रत [स०] मेरी पुश्त पर सवार हुए तो बारे रिसालत को उठाने में मुझे संगीनी महसूस हुई। मैंने कहा: ऐ अल्लाह के नबी मैं ही आप की पुश्त पर सवार हो जाता हूँ। रसूल मुस्कुराते हुए नीचे उतरे और अपनी पुश्त को मेरे लिए हमवार किया और मैं इस पर सवार हो गया। उस वक़्त क़सम इस ज़ात की जिसने ज़मीन पर दाने उगाए और ख़लाइक़ को ज़ेवर वजूद से आरास्ता क्या, {मैं ऐसा महसूस कर रहा था कि} अगर मैं चाहता तो आसमानों की बुलंदीयों को छू लेता। चुनांचे ख़ानाए काबा के पुश्त बाम से मैंने "हुबल को गिराया और अल्लाह ने وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ की आयत यानी ला इलाहा–इल्लललाह मोहम्मदुन रसूलूल्लाह यानी अब बुतों का सजदा नहीं होगा, और إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقاً यानी बुतों के दिन गुज़र गए, की आयत नाज़िल की और नबी अकरम ख़ाना काअबा में दाख़लि हुए और वहां दो रकात नमाज़ अदा की। (अबक़रयतुल इमाम अली[अ०], अब्बास महमूदुल एक़ाद, पे155–156)

गरचे इन दो रिवायतों में मुशाबेहत है लेकिन दोनों का एक मुशतर्का नतीजा ये कि हज़रत अली दो बार दोश–ए–नबी[अ०] पर सवार हुए और ख़ानाए काबा पर नसब बुतों को गिराया और उनके ख़ातमा के ऐलान के साथ इस्लाम की सर–बुलंदी को आम कर दिया।

२०. सबसे पहले ख़ानए ख़ुदा में विलादत और मस्जिद में शहादत

सबसे पहले ख़ाना काअबा में जिसकी विलादत और मस्जिद में शहादत हुई वो हज़रत अली अलैहिस–सलाम हैं। चुनांचे आप की ज़िंदगी का आग़ाज़ व अंजाम दोनों मस्जिद ही में हुआ।

हज़रत अली[अ0] बरोज़ जुमा मक्का में ख़ानाए खुदा के अंदर पैदा हुए और पैदा होते ही सजदे में चले गए और जुमा ही के दिन सजदे की हालत में मस्जिद के अंदर आप की शहादत हुई। और ये ऐसी फ़ज़िलत है जो आप से पहले किसी को नसीब हुई और ना ही आप के बाद किसी ने पाई।

मशहूर लेखक अब्बास महमूद अलएक़ाद लिखते हैं "इमाम अली[अ0] इस दुनिया में अपनी तक़दीर में शहादत लिखवा कर आए थे और इस दुनिया से गए भी तो ज़रबत से अपने मुक़द्दर में शहादत को लिखवा कर गए। तारीख़ का कोई मुसव्विर व मुजाहिद आप के चेहरा को भुला नहीं सकता। क्योंकि वो चेहरा एक राह–ए–खुदा के एक ऐसे मुजाहिद का है जिसने अपने हाथ और पूरे दिल–ओ–जान से राहे खुदा मैं जिहाद किया और शहीद हो गया।

फिर वो कहते हैं; तारीख़ में किस ने ऐसा हसीन अंजाम पाया है जैसा कि हम जानते हैं कि आप काबे में पैदा हुए और मस्जिद में आप की शहादत हुई। बशरियत में कौन है ऐसा जिसका आग़ाज़–ओ–अंजाम ऐसे आग़ाज़–ओ–अंजाम जैसा हो।

लिहाज़ा इमाम अली [अ0] की पूरी ज़िंदगी दीन की राह में कटी और पूरी ज़िंदगी आपका मक़सद सिर्फ इस्लाम की ख़िदमत, दीनी अक़ाइद की पासदारी, इस्लाम के सतूनों का इस्तिहकाम और अपनी हर क़ीमती और नफ़ीस चीज़ को कलिमाए

ख़ुदा को बुलंद और कलिमाए कुफ़्र को सर–निगूँ करने के लिए राह–ए–ख़ुदा में ख़र्च करना था।

और ऐसा ही हुआ चुनांचे रसूल अकरम[स0] की अनथक कोशिशें और कुर्बानीयों, उनके मुख़लिस सहाबा और सरे फ़ेहरिस्त हज़रत अमीर–ऊल–मोमनीन अली बिन अबी तालिब अलैहिस–सलाम की कोशिशों से इस्लाम का बोल–बाला हुआ और कुफ़्र सिर–निगूँ हुआ।

हुस्ने इख़्तेताम

इमाम अली अलैहिस–सलाम के मनाक़िब–ओ–फ़ज़ाइल और इस्लाम में आप की बरतरी–ओ–असबकियत, बयान करने के साथ हम पर ये भी फ़र्ज़ होता है कि हम उनका इत्तिबा और पैरवी करें और हम ही हर मैदान में अव्वल रहें। एक तालिब इल्म को हुसूले इल्म के मैदान में, एक पेशावर काम करने वाले को अपने काम में, एक ताजिर को समाज की ख़िदमत के लिए मुफ़ीद मवाक़े तिजारत ईजाद करने में, एक आलिमे दीन को अख़लाक़–ओ–अमल के मैदान में, एक जवान को दीनदारी और दीनी उमूर की पासबानी के मैदान में। और इस तरह हज़रत अली[अ0] से मोहब्बत करने वाले और उन पर ईमान रखने वाले हर फ़र्द पर ज़रूरी होता है कि वो हर मैदान में मुनफ़रिद, नुमायां और सबसे आगे रहे।

फ़र्दी और ज़ाती ज़िंदगी में पेशक़दमी और कामयाबीयों के हमराह मोमिनीन पर ज़रूरी है कि वो समाजी और मुआशरती ज़िंदगी में भी सबसे आगे रहें। अगर मोमिनीन का एक गिरोह ख़ैरात–ओ–नेकियों के काम में मशगूल हो तो दूसरे गिरोह को दूसरे ख़ैरिया प्रोजेक्टस पर काम करना चाहीए, गरचे मोमिनीन में कुछ लोग ख़ैरात के मैदान में पीछे रह जाते हैं, लेकिन हमें चाहिए कि हम अपने मुआशरे को नेक कामों और ख़ैरिया मराकिज़ और इल्मी–ओ–सक़ाफ़ती मरकज़ों की तामीर–ओ–तक़वियत में आगे और तैयार रखें, ताकि हमारा मुआशरा इन्हीं इल्मी–ओ–सक़ाफ़ती मराकिज़ और इदारों के सबब कमाल–ओ–तरक़्क़ी की राह में क़दम बढ़ा सके।

और इस तरह कहीं जाकर हज़रत अमीरूल मोमेनीन की पैरवी होती है। और हम पर ये भी ज़रूरी है कि हज़रत इमाम अली[अ0] की मोहब्बत और उनकी मुवद्दत को अपने दिलों तक महदूद ना रखें, बल्कि हमें उनके बताए हुए रास्ते पर चलना होगा और उनकी अख़लाक़ी सीरत–ओ–तालीमात पर अमल भी करना होगा, जिसकी नुमायां मिस्दाक़; अच्छे कामों और ख़ैरात में सबक़त, नेक–आमाल को अंजाम देना, इल्मी मैदानों में आगे बढ़ना, आला अख़लाक़ हासिल करना, अमली मैदान में तरक़्क़ी पाना, राह–ओ–रविश के इंतिख़ाब में बसीरत से काम लेना, किसी राय या नज़रिया के अख़तियार करने से क़बल ग़ौर–ओ–फ़िक्र करना, क़ौल–ओ–अमल में, दिल–ओ–जान से और हर इंतिख़ाब–ओ–अख़तियार

में हज़रत अली [अ0] की विलायत–ओ–इमामत और उनकी मुवद्दत–ओ–मोहब्बत पर साबित–क़दम रहना। चुनांचे यही वो रास्ता है जिसके ज़रीया हमारा मुआशरा इमाम अली अलैहिस–सलाम के नक़श–ए–क़दम पर चल कर हक़, अदल व इन्साफ़ और नेकी व सादत के रास्ते पर गामज़न हो पाएगा।

وآخر دعوانا أنِ الحمد لله رب العالمين۔ وصلى الله على سيدنا محمد وآله الطيبين الطاهرين

मनाबए–ओ–मारवज़

1–हमारा हुस्ने आग़ाज़ –कुर्आनिल करीम

2–अल–इसफेहानी, अबू बकर अहमद बिन मूसा बिन मर्दूया (410 हिजरी), मनाक़िब अली बिन अबी तालिब अ0, दारूल हदीस लिलतबाअत वलनशर, कुम, तबा सोम 1429 हि0

3–अल–अमीन, अलसैयद मोहसिन (1371 हि0, 1952 ई0), अयानुशिया, तहक़ीक़ व तालीक़ सैय्यद हसन अल अमीन, दारूल तारेफुल मतबूवात, बैरूत लेबनान, पांचवी तबा 1418हि0 1998ई0।

4–इब्ने असीर, अबूल हसन अली बिन अबील करम मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन अब्दुल करीम बिन अब्दुल वाहिद अलशेबानी त630 हि0), अल कामिल फित–तारीख़, तसहीह–ओ–तहक़ीक़ द मोहम्मद यूसुफ़ रक़ाक़, दारूल कुतूबुल इल्मिया, बैरूत लेबनान, चौथी तबा 1424 हि0 2003 ई0।

5–इब्ने असीर, अबूल हसन अली बिन अबील करम मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन अब्दुल करीम बिन अब्दुल वाहिद अलशेबानी त630 हि0), असदुल गाबेता फ़ी मारेफ़ातुस सहाबा, दारूल किताब अलअरबी, बेरूत लेबनान।

6–इब्ने हजर, अहमद बिन अली बिन हजर अलअसक़लानी, लेसानुलमीज़ान, मोससातुल आलमी, बेरूत, तबा दोम 1390 हि0 1971ई0

7–इब्ने साद, अबू अब्दुललाह मोहम्मद बिन साद बिन मनी अलबसरी अलबग़दादी (त 230 हि0), अलतबकात अलकुबरा, दारूल कुतूबल इल्मिया, बेरूत, तबा अव्वल1410 हि0 1990ई0

8–इब्ने सैय्यद अलनास, मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन अहमद अलयाअमरी अलरबई (त 734 हि0),उयूनूल असर फ़ी फुनूनूल मग़ाज़ी वश शमायल वल सीर, मोअससासा इज़उद्दीन, बेरूत, तबा आम1409 हि0 1986 ई0।

9–इब्ने शाबुलहरानी, अबू मोहम्मद अल–हसन बिन अली बिन अल–हुसैन, तोहफुल अकूल अन ऑले रसूल, मोअससासा तुल आलामी लिलमतबुवात, बेरूत, पांचवें तबाह1394 हि0 1974 ई0।

10–इब्ने शहर आशोब, अबू जाफ़र मोहम्मद बिन अली अलसरवी अलमाज़िदरानी (त588 हि0), मनाक़िब ऑले अबी तालिब, तहक़ीक़ व फ़ेरिसत द यूसुफ़ अलबकाई, दारूल अज़वा, बेरूत लेबनान, तबा दोम 1214 हि0।

11–इब्ने ताउस्, अबूल क़ासिम अली बिन मूसा बिन जाफ़र बिन मोहम्मद अल हसनी (त664 हि0), तहफ़्फ़ुज़, मोअससासा तुल दारूल किताब लिलतबाअत वल नशर, कुम, तबा अव्वल1413 हि0।

12–इब्ने असाकर, अली बिन अल–हुसैन बिन हब्बातुल्लाह अलदमिश्की (त 573 हि0), तारीख़े दमिशक़, दारूल तारूफ़, बैरूत, लेबनान, तबा आम1970ई0।

13–इब्ने कसीर, अबुल फ़िदा अल हाफ़िज़ इब्ने कसीर अलदमिश्की (त774हि0), अलबदाया वालनेहाया, आल्नी बह द अब्दुल हमीद हिन्दावी, अलमकताबातुल असरीया, बेरूत लुबनान, तबा आम1426 हि0 2005 ई0।

14–इब्ने हिशाम, अबू मोहम्मद अब्दुलमलिक बिन हिशाम अलमाफ़री, अलमकतब अलअसरीया, बेरूत लुबनान, तबा आम1433 हि0 2002 ई0।

15–अलबहरानी, अबूल मकारिम हाशिम बिन सुलेमान बिन इमाईल अलकतकानी अलतोबलानी (त1107हि0), ग़ायतुल मराम व हुज्जातुल ख़िसाम फ़ी तईएन अलइमाम मिन तरीकुल ख़ास वल आम, तहक़ीक़ अलसैयद अली आशूर, ग़ैर मज़कूर अदद अलतबा वला तारीख़ अलतबा।

16–अलतमीमी अलमग़रिबी, अबू हनीफ़ अलनोमान बिन मोहम्मद बिन मंसूर बिन अहमद (त363 हि0), शरह अल अखबार, तहक़ीक़ अलसैयद मोहम्मद उल–हुसैनी अलजलाली, मोअससासातुल नशर अलइसलामी, कुम।

17– अलतमीमी अलमग़रिबी, अबू हनीफ़ अलनोमान बिन मोहम्मद बिन मंसूर बिन अहमद (त363 हि0), अल मनाक़िब वालमसालिब, तहक़ीक़ माजिद बिन अहमद अलअतीय, मोअससासातुल आलमी, बेरूत, अलतबा अव्वल 1423 हि0 2002ई0।

18–अलहलबी अलशाफ़ई, अबूल फ़रज नूरउद्दीन अली बिन इब्राहिम बिन अहमद 1044 हि0), अलसीरतुल हलबी, ज़ब्ता व सेहहा अब्दुल्लाह मोहम्मद अलख़लीली, दारूल कुतूब अलइलमीया, बेरूत, अलतबा सालेस 2008 ई0।

19–अलख़्वा रज़मी, अलमौफ़िक़ बिन अहमद बिन मोहम्मद अलमकी (त568 हि0), अलमनाक़िब, मोअससासातुल नशर अलइसलामी, कुम, अलतबा अलख़ामेसा 1425हि0।

20–अलरज़ी, अलशरीफ़, नजुलबलागा़ इमाम अली बिन अबी तालिब, शरह शेख़ मोहम्मद अब्दह, दारूल बलागा़, बेरूत लुबनान, अलतबा अलराबे 1409हि0 1989ई0।

21–अलसालेही अलशामी, मोहम्मद बिन यूसुफ़, सिब्बलुल हुदा फ़ी सीरते ख़ैरूल ईबाद, दारूल कुतूब अलआलमी, बेरूत लुबनान, अलतबा अव्वल 1414 हि0।

22–अलसुदूक़, अबू जाफ़र मोहम्मद बिन अली बिन हुसैन बिन बाबवैय ये अलकमी (त381 हि0), अलतौहिद, सेहहा वाअल्लक़ अलैह अलसैयद हाशिम अल–हुसैनी अलतेहरानी, दारूल मारेफत़, बेरूत लुबनान, ग़ैर मज़कूर अदद अलतबा वला तारीख़ेहा।

23–अलतिबरी, अबू जाफ़र मोहम्मद बिन जरीर (त310 हि0), तारीख़ अलतबरी, तारीख़े उमम वल मलूक, दारूल कुतूब अलइल्मीया, बेरूत लेबनान, अलतबा अलसानी 1424 हि0 2003 ई0।

24–अलतूसी, अबू जाफ़र मोहम्मद बिन हसन बिन अली(त460 हि0), अलअमाली, मोअससासात तारीखुल़ अरबी, बेरूत, अलतबा अव्वल1430 हि0 2009 ई0।

25–अलआमली, जाफ़र मुर्तज़ा, अलसहीह मिन सीरतुन्नबी अलआज़म, अलमकरज़े अलईसलामी लिलद्रासात, बेरूत लुबनान,अलतबा अलख़ामेसा 1428हि0 2007ई0।

26–अलएकाद, अब्बास महमूद, अबक़रयतुल इमाम अली, दारूल किताब लिल बनानी, बेरूत लुबनान, अलतबा अलसानी1411 हि0 1991 ई0।

27–अलफ़ज़ली, अब्दुल हादी, खुलासते इल्मुलकलाम, मरकजुल ग़दीर लिल द्रासात, बेरूत लुबनान, अलतबा अलसालिस 1428 हि0 2007 ई0।

28–अलकंदोज़ी अलहनफ़ी, सुलेमान बिन इब्राहिम अल–हुसैनी अलबलख़ी, यनाबे अलमोअदत, मोअससासा अलमी लिलमतबुआत, बेरूत लुबनान, अलतबा अव्वल 1418 हि0 1997 ई0।

29–अलकुलीनी, मोहम्मद बिन याकूब (त329 हि0), उसूल अलकाफ़ी, ज़िब्ते व सेहहा व अल्लक़ अलैह शेख़ मोहम्मद जाफ़र शम्सुद्दीन, दारूल ताअरूफ़ लिलमतबुवात, बेरूत लुबनान, तबा आम 1419 हि0 1998ई0।

30–अलमजलिसी, मोहम्मद बाक़िर बिन मोहम्मद तक़ी, बिहारूल अनवार, मोअससासत अहले बैत, अलतबा अलराबेआ 1409 हि0 1989 ई0।

31–अलमुर्तज़ा, अली बिन अल–हुसैन अल मूसवी अलअलवी(त436 हि0), अमाली अलमुर्तज़ा ग़ेरारूल अलफ़वाएद दारूल क़लायद, अलमकतबा अलअसरीया, बेरूत, अलतबा अव्वल 1425हि0 2004ई0।

32–अलमरअशी अलनजफ़ी, अलसैयद शहाबुद्दीन(त1411 हि0), शरह अहक़ाकुल–हक़, मंशूरात मकतबे आयतुल्लह अल उज़मा मरअशी, कुम, अलतबा अव्वल1415 हि0।

33–अलमुफ़ीद, अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन अलनोमान अलअकबरी अलबग़दादी (त413 हि0), अलइरशाद, मोअससासातुल तारीख़ अलअरबी, बेरूत लुबनान, अलतबा अव्वल, ग़ैर मज़कूर तारीख़ अलतबा।

34–अलनिसाई, अबु अब्बदुर्रहमान अहमद बिन शुऐब (त303 हिव), ख़साएसे अमीरूल मोमेनीन अली बिन अबी तालिब, अलमकतबत अलअसरीया, बेरूत लुबनान, तबा आम1424 हि0 2003ई0।

35–अलमुत्तक़ी अलहिंदी, अलाउद्दीन अली अलमुत्तक़ी बिन हिसामउद्दीन, कंन्जुल उम्माल फ़ी सुंनानिल अक़वाल, मोअससासातुर रिसालत, बेरूत लुबनान, तबा आम1409 हि0 1989ई0, ग़ैर मज़कूर अदद अलतबा।

हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन शेख
डॉक्टर **अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ** (क़तीफ़)

हुज्जतुल–इस्लामं वलमुसलेमीन
मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन (कुवैत)

IDARA-E-ISLAH
Masjid Diwan Nasir Ali, Murtaza Husain Road
Yahiyahganj, Lucknow - 226003, (U.P.) INDIA
www.islah.in, E-mail: islah_lucknow@yahoo.co.in